203 MA HIN

by Cde Anu

Submission date: 26-Jul-2025 01:17PM (UTC+0530)
Submission ID: 2720717102
File name: 203_M.A._HINDI-MP.pdf (7.09M)
Word count: 28045
Character count: 112306

MODERN POETRY

एम.ए., हिन्दी Semester-II, Paper-III

निर्देशक

डॉ.नागराजूबट्टू

एम.एच.आर.एम., एम.बी.ए., एल.एल.बी., एम.ए., (मनो) एम.ए., (सामा) एम.ई.डी., एम.फिल., पी-एच.डी

दूरस्थ शिक्षा केंद्र, आचार्य नागार्जुना विश्वविद्यालय

नागार्जुना नगर-522510

Phone No-0863-2346208, 0863-2346222,

0863-2346259 (अध्ययन सामग्री)

Website: www.anucde.info

E-mail: anucdesemester2021@gmail.com

M.A. (Hindi): Modern Poetry

First Edition: 2021

Reprint :

No. of Copies

© Acharya Nagarjuna University

This book is exclusively prepared for the use of students of M.A (Hindi), Centre for Distance Education, Acharya Nagarjuna University and this book is mean for limited circulation only

Published by

Dr.Nagaraju Battu

Director

Centre for Distance Education

Acharya Nagarjuna University

Nagarjuna Nagar-522510

Printed at

FOREWORD

Since its establishment in 1976, Acharya Nagarjuna University has been forging ahead in the path of progress and dynamism, offering a variety of courses and research contributions. I am extremely happy that by gaining 'A' grade from the NAAC in the year 2016, Acharya Nagarjuna University is offering educational opportunities at the UG, PG levels apart from research degrees to students from over 443 affiliated colleges spread over the two districts of Guntur and Prakasam.

The University has also started the Centre for Distance Education in 2003-04 with the aim of taking higher education to the door step of all the sectors of the society. The centre will be a great help to those who cannot join in colleges, those who cannot afford the exorbitant fees as regular students, and even to housewives desirous of pursuing higher studies. Acharya Nagarjuna University has started offering B.A., and B.Com courses at the Degree level and M.A., M.Com., M.Sc., M.B.A., and L.L.M., courses at the PG level from the academic year 2003-2004 onwards.

To facilitate easier understanding by students studying through the distance mode, these self-instruction materials have been prepared by eminent and experienced teachers. The lessons have been drafted with great care and expertise in the stipulated time by these teachers. Constructive ideas and scholarly suggestions are welcome from students and teachers involved respectively. Such ideas will be incorporated for the greater efficacy of this distance mode of education. For clarification of doubts and feedback, weekly classes and contact classes will be arranged at the UG and PG levels respectively.

It is my aim that students getting higher education through the Centre for Distance Education should improve their qualification, have better employment opportunities and in turn be part of country's progress. It is my fond desire that in the years to come, the Centre for Distance Education will go from strength to strength in the form of new courses and by catering to larger number of people. My congratulations to all the Directors, Academic Coordinators, Editors and Lesson- writers of the Centre who have helped in these endeavours.

Prof. P. Raja Sekhar
Vice-Chancellor
Acharya Nagarjuna University

203HN21

SEMESTER - II

PAPER - III : MODERN POETRY

आधुनिक कविता

पाठ्य पुस्तकें :

1.अ. प्रिय प्रवास - प्रथम सर्ग : ''हरिऔध'' ।

आ. कामायनी - जयशंकर प्रसाद, ''श्रद्धा'' ।

2.अ. सूर्यकांत त्रिपाठी ''निराला'' - राम की शक्ति पूजा ।

आ. सुमित्रानंदन पंत - नौका विहार, ताज, भारत माता, दृत झरो ।

इ. महादेवी वर्मा :1. धीरे - धीरे उतर क्षितिज से ।

2. विरह का जलजात जीवन ।
3. तुम मुझ में प्रिय ।
4. मधुर - मधुर मेरे दीपक जल ।
5. मैं नीर भरी - दुःख की बदली ।

II. **आधुनिक कविता - पृष्ठभूमि :**

1. आधुनिक शब्द की व्याख्या, मध्यकालीन संवेदना और आधुनिक संवेदना, आधुनिकता की दिशाएँ, आधुनिक काव्य के प्रेरणा स्रोत, आधुनिक कविता का विकास, भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग ।
2. छायावादी कविता : छायावाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, छायावादी काव्य प्रवृत्तियाँ, प्रतिनिधि कवि, छायावादी कविता के आधार स्तंभ, प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी का काव्य विकास ।

क. जयशंकर प्रसाद - काव्य वैशिष्ट्य, काव्य की अंतर वस्तु रूप और अभिव्यंजना कौशल, कामायनी की और महाकाव्य की नयी अवधारणा, कामायनी : छायावादी काव्य की मानक कृति, मानव मूल्य, जीवन दर्शन, प्रेम और सौन्दर्य ।

ख. निराला - काव्य वैशिष्ट्य, प्रगति और प्रयोग, भाषा और शिल्प संवेद्य और समृद्धि, निराला की लम्बी कविताएँ और महाकाव्यात्मक गरिमा, क्रांतिकारी कवि निराला, सौन्दर्य और प्रेम के गायक निराला।

ग. ''पंत'' काव्य-वैशिष्ट्य, कल्पना और सौन्दर्य, पंत का प्रकृति काव्य, भाषा सैष्ठव, काव्य शिल्प ।

घ. महादेवी वर्मा - दार्शनिक आधार, गीतात्मकता ।

छायावादोत्तर काव्य : छायावादी काव्य और छायावादोत्तर काव्य की विभाजक रेखा । प्रगतिवाद और प्रयोगवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियाँ ।

साठोत्तरी कविता : कविता के आयाम, छायावादोत्तर विशिष्ट रचनाकार ।

सहायक ग्रन्थ :

1. हिन्दी साहित्य - बीसवीं शताब्दी - नंद दुलारे वाजपेयी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
2. आधुनिक साहित्य - नंद दुलारे वाजपेयी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
3. आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ - डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
4. छायावाद - नामवरसिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।
5. प्रसाद का काव्य - प्रेमशंकर, भारती भण्डार, इलाहाबाद ।
6. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ - डॉ. नामवरसिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।
7. निराला की साहित्य साधना : भाग - दो - राम विलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।
8. क्रांतिकारी कवि निराला - बच्चन सिंह ।
9. कविता के प्रतिमान - डॉ. नामवरसिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।
10. समकालीन हिन्दी कविता - विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ।

अनुक्रमणिका

1. प्रियप्रवास 1.1-1.6

1. 'प्रियप्रवास' के महाकाव्यत्व पर झाँकी डालिए।

(अथवा)

'प्रियप्रवास' खडी बोली का प्रथम महाकाव्य है - समीक्षा कीजए।

2. कामायनी 2.1-2.17

1. कामायनी में महाकाव्य का महत्त्व समझाइए।

(अथवा)

कामायनी के महाकाव्यत्व का मूल्यांकन कीजिए।

2. कामायनी में रूपक तत्त्व पर विचार कीजिए।

(अथवा)

कामायनी में व्यक्त दर्शन की समीक्षा कीजिए।

3. कामायनी महाकाव्य में 'श्रद्धा सर्ग' की विवेचना करते हुए कवि के जीवन-दर्शन पर प्रकाश डालिए। 3.1-3.11

(अथवा)

'श्रद्धा सर्ग' का भावात्मक सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

(अथवा)

कामायनी में 'श्रद्धा सर्ग' की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

3. राम की शक्ति पूजा।

1. राम की शक्ति पूजा की समीक्षा कीजिए।

2. राम की शक्ति पूजा के काव्य सौन्दर्य का मूल्यांकन कीजिए।

4. तारापथ 4.1-4.14

1. 'नौका विहार' कविता का सारांश लिखकर विशेषताएँ बताइए।
2. 'ताज' कविता में पल्लवित पंतजी की भावनाओं को व्यक्त कीजिए।
3. 'भारतमाता' कविता में अभिव्यक्त पंतजी की देशभक्ति (देशप्रेम) का विवरण दीजिए।
4. सुमित्रानन्दन पन्त कृत 'द्रुत झरो' कविता की समीक्षा कीजिए।
5. पंत के 'प्रकृति-चित्रण' पर प्रकाश डालिए।

5. सन्धिनी 5.1-5.21

1. 'धीरे-धीरे उत्तर क्षितिज से' - महादेवी वर्मा की कविता का मूल्यांकन कीजिए।
2. 'विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात' कविता में महादेवी जी के भावोद्गारों की समीक्षा कीजिए।
3. महादेवी वर्मा कृत 'मधुर - मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयत्री का हृदयांकन हुआ है, समीक्षा कीजिए।
4. 'मैं नीर भरी दुख की बदली' कविता में महादेवी जी की भावनाओं का मूल्यांकन कीजिए।
5. 'महादेवी का वेदना-भाव' पर लेख लिखिए।
6. महादेवी वर्मा की कविता में व्यक्त रहस्यवाद का उल्लेख कीजिए।

प्रिय प्रवास

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

पाठ - सर्ग - 1

1. 1

प्रश्न :-

1. प्रस्तावना :-

'प्रियप्रवास' :- खडीबोली हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है। यह काव्य सत्रह सर्गों में विभक्त है। अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी की अद्‌भुत प्रतिभा एवं गहन अनुभूति का द्योतक है प्रियप्रवास काव्य। यह काव्य हिन्दी के गौरव ग्रन्थों की श्रृंखला में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस के महाकाव्यगत लक्षण इस प्रकार हैं –

2. कथानक :-

श्रीकृष्ण मथुरा चले जाते है तो व्रज में विरह-व्यथित गोप-गोपीजन कृष्णचन्द्र का गुण-गान करते हुए उनके जीवन से सम्बन्धित विविध घठनाओं का कथा के रूप में वर्णन करते हैं। पूतना, तृणावर्त, शकटासुर, वकासुर, कालीनाग, कंस, जरा संध आदि की प्रासंगिक कथाएँ आयी हैं। काव्य की संपूर्ण कथा संधि-संध्यंगों, कार्यावस्थाओं तथा अर्थ प्रकृतियों से सुनियोजित है। यशोदा और नन्द के हार्दिक भावों की व्यंजना, व्रजवासियों का करुण विलाप, पवनदूती प्रसंग, यशोदा का करुणा-क्रन्दन, उद्धव-गोपी संवाद, राधा-उद्धव संवाद, गोपियों की विक्षिप्तावस्था आदि मार्मिक घटनाओं की सुन्दर योजना की गई है। कथावस्तु प्रख्यात है। कृष्णचन्द्र को महान नेता एवं लोकसेवी नायक के रूप में अंकित किया गया है। कृष्ण के जीवन की समस्त अलौकिक घठनाओं को यथार्थ-रूप में प्रस्तुत किया गया है युग की नैतिकता, आदर्शवादिता एवं तर्कवादिता से कथानक को ओतप्रोत कर दिया गया है। कथानक लोकोपकार, समाज सेवा, जन्मभूमि के प्रति अनुपम

श्रद्धा, दुराचारी के प्रति विद्रोह-भावना, स्वदेश प्रेम आदि से परिपूर्ण होने के कारण प्रियप्रवास काव्य में महाकाव्य का महत्त्व है।

3. पात्र तथा चरित्र-चित्रण :-

हरिऔध जी ने विविध पात्रों के चरित्र का उद्घाटन किया है। समस्त पात्रों में से प्रधानतया चार पात्र हैं - कृष्ण, राधानन्द और यशोदा।

(क) श्रीकृष्ण :

श्रीकृष्ण को कवि ने परब्रह्म के रूप में चित्रित न करके एक महात्मा पुरुष-सिंह, लोकसेवी एवं परोपकारी नेता के रूप में प्रस्तुत किया है। मानवता की साकार मूर्ति के रूप में श्रीकृष्ण का चित्रण हुआ है। श्रीकृष्ण व्रज-जीवन के आधार बनते हैं। वे अपनी रूप-माधुरी से व्रज को विमुग्ध कर देते हैं। वे व्रज के प्राण एवं सुरम्य मूर्ति के रूप में व्यक्त होते हैं। मानवता के वे अनन्यपुजारी हैं। शकटासुर, बकासुर, व्योमासुर आदि का वध कर व्रजवासियों की रक्षा करते हैं। स्व-जाति के उद्धार को वे महान धर्म मानते हैं। श्रीकृष्ण की लोकहित भावना, कर्त्तव्यपरायणता परदु:ख कातरता एवं मानवता के प्रति अप्रमेय श्रद्धा प्रशंसनीय है। वे जन-जन के हृदय में निवास करने वाले महामानव है।

(ख) राधा :-

'प्रियप्रवास' में दूसरा प्रधान पात्र राधा है। राधा अपने प्राचीन रूप का पूर्णरूप से परित्याग करके अपने प्रिय कृष्ण के अनुकूल सदा लोकोपकार, निरत जनसेविका, भारतीय स्त्री रत्न के रूप में दर्शित होती है। उसकी रूप माधुरी, सुकुमारता, कमनीयता, संवेदन-शीलता आदि महान लक्षण हैं। स्त्रियोचित समस्थ गुणों से संपन्न होकर भी कृष्ण के प्रेम में आजन्म कौमार्य व्रत का पालन करती है। वह कृष्ण की अनन्य उपासिका है। प्रकृति के असीम सौन्दर्य में अपने प्रियतम की रूप-माधुरी वह दर्शाती रहती है। व्रजभूमि की सेवा में वह अपना सारा जीवन उत्सर्ग कर देती है और व्रज की आराध्य-देवी बन जाती है।

(ग) नन्द :-

नन्द व्रज के अधिपति हैं, अत्यन्त पूज्य तथा सम्माननीय और व्रजवासियों के लिए श्रद्धापद हैं। वे वात्सल्य के मूर्तमान रूप हैं। वे कर्तव्यपरायण पति तथा पिता हैं। पुत्र कृष्ण के लोकोपकार एवं जन-सेवी कार्यों पर वे अतुलित आनन्द की प्राप्ति करते हैं।

(घ) यशोदा :-

'प्रियप्रवास' में यशोधा का चरित्र-चित्रण अत्यन्त मार्मिक तथा प्रभावोत्पदक विधान में हुआ है। वह

मातृत्व की विमल विभूति और वात्सल्य की मूर्ति है। अपने पुत्र को मथुरा से लौट कर न आते देख कर व्यथित होती है। उसके करुण विलाप में वेदना और विह्वलता भरी होती है।

4. प्रकृति-चित्रण :-

'प्रियप्रवास' में प्रकृति का मनोहर चित्रण हुआ है। प्रकृति-सुन्दरी की अनुपम छवि और प्रकृति का रहस्यात्मक रूप काव्य में वर्णित है। प्रकृति के विविध रूपों की झाँकियाँ वर्णित हैं। प्रकृति के आलम्बन रूप का चित्रण अधिक हुआ है। नवम सर्ग के अन्तगर्ग गोवर्धन पर्वत की अलौकिक शोभा का वर्णन देखिए -

ऊँचा शीश सहर्ष शैल करके था देखता व्योम कोद्य

या होता अति ही स-गर्व वह था सर्वोच्चता दर्प से।

या वार्ता यह था प्रसिद्ध करता सामोद संसरा में

मैं हूँ सुन्दर मानदण्ड व्रज की शोभामयी भूमि का।

प्रियप्रवास काव्य में प्रकृति के मनोरम रूप के चित्र के साथ भयंकर रूप की झाँकियाँ भी अंकित हैं। प्रकृति की भीषण मूर्ति का संश्लिष्ट भयानक रूप देखिए - प्रकटती बहु भीषण मूर्ति थी, कर रहा ताण्डव नृत्य था। विकट दन्त भयंकर प्रेत भी विचरते तरुमूल समीप से।

'प्रियप्रवास' काव्य में प्रकृति के आलम्बन, उद्दीपन, संवेदनात्मक, प्रतीकात्मक आदि रूपों का वर्णन हुआ है। अलंकारों के लिए भी प्रकृति का पर्याप्त प्रयोग हुआ है। राकेन्दु जैसे मुख, मृग जैसे नेत्र, सरोज जैसे चरण, बिम्बा और विद्रुम से भी बढ़ कर कान्तिसम्पन्न ओंठ, अरविन्दमुख आदि के वर्णन में प्रकृति जन्य अलंकारों का प्रयोग हुआ है। लोक-शिक्षा के रूप में भी प्रकृति का वर्णन हुआ है। विरह व्यथित राधा पवन को अपना संदेश देकर, मधुवन में श्रीकृष्ण के पास भेजती है। दूती के रूप में प्रकृति की मनोरम झांकी का शून्य देखिए - (तू जाती है सकल थल ही वेगवाली बडी है। तू है सीधी तरल हृदया नाम उन्मूलती है। मैं हूँ जी में बहुत रखती वायु तेश भरोसा। जैसे हो ऐ भगिनी बिगडी बात मेरी बना दे।)

5. युग-बोध :-

प्रियप्रवास में हरिऔध जी ने युग की परिस्थितियों के अनुकूल ही काव्य की रचना की है। एक समय ब्रह्मसमाज,आर्यसमाज, थियोसोफिकल सोसायटी आदि सुधारवादी संस्ताएँ प्रचलित थीं। जनसाधारण के हृदयों से ऊँच-नीच, धुआछूत, मनोमालिन्य आदि की भावनओं को दूर करके सहृदयता, एकता, संगठता,

मानवता विश्वबन्धुत्व, भावन आदि का प्रचार हो रहा था। सामाजिक दुराचारों का निर्मूलन करने के लिए जन-जागरण हो रहा था। विश्वप्रेम तथा विश्वबन्धुत्व भावना प्रियप्रवास काव्य में अंकित हुई है। प्राणिमात्र के हृदय में उदारता, सहनशीलता एवं सहिष्णुता के भाव के भाव काव्य में प्रस्तुत हुए है। 'प्रियप्रवास' में तत्कालीन राजनीतिक जीवन की झांकी झलकती है और तत्कालीन युग के क्रान्तिकारी विचारों की झलक भी विद्यमान है।

6. भावपक्ष तथा रस - निरुपण :-

प्रियप्रवास विप्रलंभ श्रृंगार-प्रधान काव्य है। आद्यन्त वियोगजन्य करुणा का ही प्राधान्य है। प्रारंभिक सर्गों में कुछ क्षणों के लिए संयोग श्रृंगार की झलक मिलती है। किन्तु, वह आगामी वियोग के लिए पृष्टभूमि का कार्य करती है। नन्दबाला कृष्ण को मथुरा में छोड कर अकेले बृन्दावन लौट आते हैं, तो उस समय माँ यशोदा अपने प्राणप्रिय पुत्र कृष्ण के लिए व्यथित होती है। उसके विलाप में कितनी कसक, कितनी वेदना, कितनी टीस और कितनी वेदना भरी हुई है, जिसे सुनकर पाषाण-हृदय भी द्रवित होता है।

हा! वृद्धा के अतुल धन, हा! वृद्धता के सहारे।
हा! प्राणों के परम प्रिय, हा! एक मेरे दुलारे।
हा! शोभा के सदन, हा! रूप लावण्य वाले।
हा! बेटा! हा! हृदय धन, हा! नेत्रतारे हमारे।

यशोदा के इस वात्सल्य भाव के साथ ही राधा का वियोग भी अत्यन्त हृदयग्राह्य है। विरहिणी राधा विरहाग्नि में तपकर विरह साकार प्रतिमा बन जाती है। प्रियप्रवास काव्य में भयानक, वीर, रौद्र, अद्‌भुत आदि रसों का यत्र-तत्र सगावेण हुआ है। राधा-कृष्ण के पवित्र-प्रेम के साथ उनके वीर आषों के अन्तर्गत दानवीरता, युद्धवीरता, युद्धवीरता और धर्मवीरता तथा-देश-भक्ति, राष्ट्रप्रेम, विश्वप्रेम आदि का सजीव तथा देश-भक्ति, राष्ट्रप्रेम, विश्वप्रेम आदि का सजीव तथा मार्मिक चित्रण हुआ है। उद्धव के आगमन पर गोकुल में अत्यन्त उत्सुकता, उत्कण्ठा, आतुखा का संजीव तथा चित्रण हुआ है।

प्रियप्रवास भाव-सौन्दर्य की मनोरम झाँकियों से परिपूर्ण सरस महाकाव्य है।

7. कलापक्ष :-

प्रियप्रवास सत्रह सर्गों का सर्गबद्ध बृहत् काव्य है। इसके नवम तथा षोडश सर्ग कथा-विस्तार के कारण अपेक्षाकृत कुछ बडे हैं। कथा के अनुसार ही सर्गों की योजना की गई है। अन्य काव्यों की भाँति इस काव्य में मंगलाचरण नहीं है। 'दिवस का अवसान समीप था'। पंक्ति में दिवस शब्द मंगलाचरण का द्योतक माना

जाता है। संपूर्ण काव्य खल निन्दा एवं सज्जन प्रशंसा से परिपूर्ण है। बकासुर, अघासुर, केशी, व्योमासुर, कंस, जरासंध आदि अत्याचारियों की पर्याप्त निन्दा की गयी है। कृष्ण के मानवोचित सत्कार्यों की चर्चा में उनके अपूर्व व्यवहार, रसीली वाणी, विनम्रता, परदुःख कातरता, सरसता गुरूजनों के प्रति शिष्टता एवं विनम्रता, व्यथितों की रक्षा, विनोदप्रियता आदि गुणों की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है।

प्रथमतः काव्य का नाम 'ब्रजांगना विलाप' रखा गया था। फिर हरिऔध ने काव्य का 'प्रियप्रवास' नामकरण किया । काव्य की भाषा संस्कृत गर्भित खडीबोली है। कहीं-कहीं व्यावहारिक भाषा की मात्रा भी मिलती है । शब्द मैत्री के साथ चित्रोपमता पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है । चित्रोपम शैली का सजीव चित्र अंकित हुआ है। ब्रजभाषा दिंग, जुगुत, लैख और याँ, नाँ लाँबी, बेंडी, धौल फेर आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। काव्य की अलंकार योजना बडी ही सशक्त एवं भावानुकूल है। शब्दालंकार एवं अर्थालंकार दोनों का पर्याप्त मात्रा में प्रयोग हुआ है। सादृश्यमूलक अलंकारों का प्रयोग अधिक हुआ है। उत्प्रेक्षा, रूपक, रूपकातिशय, व्यतिरेक, संदेह, स्मरण, प्रतीप, परिकर, विषम, दृष्टान्त, अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों का सफल प्रयोग हुआ है।

प्रियप्रवास काव्य का छन्द विधान अनुपम तथा अनूखा है । सर्वत्र संस्कृत वृत्तों का प्रयोग हुआ है। द्रुतविलम्बित, मालिनी, शार्दूलविक्रीडित, मन्दाक्रान्ता तसन्त-तिलका, वंशस्य आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है।

8. उद्देश्य :-

प्रियप्रवास में लोकहित का स्वर प्रधान रहा है। हरिऔध जी ने अवतारी पुरूष श्रीकृष्ण के अलौकिक एवं अमानवीय चरित्र को लौकिक एवं मानवीय रूप देने का प्रयत्न किया है। वे महान नेता की भाँति स्वजाति, स्वदेश एवं स्वराष्ट्र की रक्षा और उसकी उन्नति के लिए त्याग करते हुए प्रेम और परोपकार की साकार मूर्ति बन जाते हैं । कवि ने कृष्ण और राधा सम्बन्धी परम्परागत विचारों के विरुद्ध नवीन मानव जीवन का चित्रण किया है तथा उच्चकोटि के मानवीय आदर्शों की स्थापना की है। अतः प्रियप्रवास काव्य एक महान उद्देश्य एवं महत् प्रेरणा से ओतप्रोत है।

9. उपसंहार :-

प्रियप्रवास खडीबोली का प्रथम महाकाव्य है। इस काव्य की रचना के समय खडीबोली अधिक सशक्त, सक्षम एवं व्यजना-प्रधान नहीं बनी थी। अतः इस काव्य में उच्चकोटि के महाकाव्यों की सी गुरूता, गम्भीरता

आदि लक्षण ढूँढ़ नहीं सकते। फिर भी कलात्मकता, चमत्कार प्रियता, नवीनता एवं युगानुकूल अभिव्यक्ति के कारण यह महाकाव्यों की श्रेणी में रखा जाता है। पदमावत्, रामचरितमानस, कामायनी आदि महाकाव्यों की महत्ता प्रियप्रवास में नहीं है। फिर भी भावों की गहनता, विचारों की गम्भीरता, उद्देश्य की महानता, कल्पना की नवीनता, अनुभूति की तीव्रता तथा अभिव्यक्ति की कुशलता एवं प्रौढ़ता के कारण प्रियप्रवास महाकाव्यों की श्रेणी में रखा जाता है।

'प्रियप्रवास' खडीबोली के युग का आलोक स्तम्भ है और आगामी महाकाव्यों का पथ-प्रदर्शक है।

* * * * *

Lesson Writer

- अन्ना नागलक्ष्मी ए.ए.

कामायनी

- जयशंकर प्रसाद

2. 1

कामायनी के महाकाव्यत्व का मूल्यांकन

रुपरेखा :-

1. प्रस्तावना - महाकाव्य के लक्षण
2. उदात्त कथानक
3. उदात्त कर्म (कार्य) - इच्छा, क्रिया, ज्ञान
4. उदात्त रसयोजना
5. उदात्त पात्र
6. शैली की उद्त्त योजना
7. उपसंहार

मनु - मन

श्रद्धा - हृदय

इडा - बुद्धि

मानव - कुमार

1. प्रस्तावना - महकाव्य के लक्षण :-

साहित्य दर्पणकार विश्वनाथ के अनुसार महाकाव्य के आठ लक्षण बताये गये हैं।

सर्गबन्धो महाकाव्य तत्रैको नयकः सुरः।

सद्वेशः क्षत्रियोवापि धीरोदत्त गुणान्वितः॥

1. महाकाव्य की रचना सर्गों में होनी चाहिए।
2. नायक कोई दैव अथवा सद्वंश में उत्पन्न धीरोदात्त क्षत्रिय होना चाहिए।
3. महाकाव्य की कथावस्तु इतिहास प्रसिद्ध या परम्परा द्वारा लोक विख्यात किसी प्रसिद्ध सज्जन की होनी चाहिए। राजाओं का एक पूरा कुल भी महाकाव्य का विषय हो सकता है।
4. श्रृंगार, वीर और शांतरस की प्रधानता के साथ अन्य रसों का समावेश होना चाहिए।
5. कम से कम आठ संतुलित सर्ग होने चाहिए और सर्ग में प्रधानत: एक ही छन्द रहना चाहिए। सर्ग के अंत में छन्द परिवर्तित कर देना चाहिए।
6. संध्या, रात्रि, प्रभात, दिन, चन्द्रमा, सूर्य, ऋतु, पर्वत, सागर, बन आदि का प्राकृतिक वर्णन होना चाहिए।
7. प्रासंगिक कथाओं का मूल कथा के साथ सम्बन्ध एवं संक्षिप्त होना चाहिए।
8. महाकाव्य द्वारा धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष में से कम से कम एक फल की प्राप्ति होनी चाहिए।

आधुनिक दृष्टि कोण :-

साहित्य और समाज का नित्य संबन्ध होता है। समय के अनुसार और समाज की चित्तवृत्ति के अनुसार काव्य का निर्माण होता है। इसलिए आधुनिक काव्यों में स्थूल के स्थान पर सूक्ष्म का प्रभाव व्यक्त होता है। पात्रों का मनोवैज्ञानिक स्तर पर चित्रण हो रहा है। बाह्य संघर्ष के स्थान पर मानसिक (आन्तरिक) संघर्ष का चित्रण हो रहा है। भौतिक घटनाओं के स्थान पर चित्तवृत्ति की संरचना दिखाई दे रही है। कामायनी में स्थूल कथा निमित्त मात्र है । कथा और पात्र अन्तर्मुख होकर चलते हैं।

प्रसाद जी ने कामायनी की रचना महाकाव्य के रूप में की है। ऐतिहासिक पात्रों को लेकर उन्होंने मानवीय भावनाओं में काव्य की रचना की है। प्रसाद जी ने स्वयं कामायनी को महाकाव्य माना है। परंपरागत काव्य शैली में हम कामायनी को बाँध नहीं सकते। आधुनिक काव्य जगत् में छायावाद और रहस्यवाद एक शास्त्रीय चेतना है। इन दोनों वादों में मानवीय भावनाओं का सूक्ष्म अनुशीलन हुआ है। आचार्य नागेन्द्र ने कामायनी की चर्चा आधुनिक दृष्टिकोण में की है, और उन्होंने स्वयं बताया है कि कामायनी – ''मानव चेतना का महाकाव्य है।''

उदात्तता कामायनी महाकाव्य का प्राण है। इसलिए महाकाव्य के सारे लक्षणों में उदात्तता कामायनी में दर्शित होती है।

2. उदात्त कथानक :-

कामायनी की घटनाएँ मानव आत्मा या मानव चेतना से संबन्धित हैं। स्वार्थपूर्ण अहंकार का पराभव, पुरुष और नारी का प्रथम मिलन, नारी का सर्वस्व समर्पण, पुरुष और नारी के प्रणय कलापों में संसृति का विलास पुरुष की अधिकार भावना बुद्धि बल से अधिकार क्षेत्र प्राप्त करना, अहंकार का वैकल्प अन्त में समरस में मग्न होना-ये सब मानव की चेतना के तथा संघर्ष के विविध स्तर हैं। कामायनीकार इन आन्तरिक घटनाओं के साथ-साथ अध्यात्मिकता को भी ले चलते हैं। मनु, श्रद्धा से उत्पन्न अपने पुत्र मानव को इडा (बुद्धि) के हाथ में सौंपकर चले जाना और तपस्या में लीन होना एक समरसता है। कथानक का प्रारंभ दुःख से हुआ है और समापन समरसता या आनन्द से। इसीलिए कामायनी का कथानक उदात्त है। उस में आदि मानव वैवस्यत मनु की कथा है।

3. उदात्त कर्म (कार्य) - इच्छा, क्रिया, ज्ञान :-

कामायनी में भाववृत्ति, कर्मवृत्ति और ज्ञानवृत्ति का सामंजस्य हुआ है। इच्छा, क्रिया और ज्ञान की विश्रृंखलता होने पर मानव जीवन विकसित नहीं होता। इसलिए इच्छा, ज्ञान और क्रिया में सामंजस्य की आवश्यकता कामायनी में बताई गई है।

ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यों पूरी हो मन की
एक दूसरे से न मिल सके
यह विडंबना है जीवन की।

इसलिए कामायनी का कार्य भावजगत्,कर्मजगत् और ज्ञानजगत् का सामंजस्य बताया गया है।

4. उदात्त रसयोजना :-

परंपरागत महाकाव्यों में आंगी रस तथा उसकी पुष्टि में अन्य रसों का समावेश होता है। कामायनी में विविध रसों का समावेश हुआ है। प्रलय आता है तो बीभत्स रस है। आदि मानव मनु की चिन्ता में करुण रस है। श्रद्धा-हृदय और ममता के साथ आकर मनु को कर्मठ बना देती है और मनु से सन्तान की प्राप्ति भी कर लेती है। यहाँ श्रृंगार रस और वात्सल्य रस का समावेश हुआ है।

चिन्ता, आशा, काम, वासना, लज्जा आदि मनोवैज्ञानिक दशाओं को पार कर के मानव ज्ञान लोक (इडा) में प्रवेश करता है। वहाँ मानव भौम (भौतिक) परिवेश को भूलकर आनन्दमय कोश में प्रवेश करता है जहाँ

जड-चेतन, सुख-दु:ख आदि मनोमय कोश लुप्त हो जाते हैं और मन आनन्दमय कोश में पल्लवित होता है।

समरस थे जड या चेतन
सुन्दर साकार बना था
चेतनता एक विलसती
आनन्द अखण्ड घना था।

इस प्रकार कामायनी का रस मानव को मनोमय कोश से ऊपर उठाकर आनन्दमय कोश तक पहुँचाने वाला आनन्द रस है वही आत्म रस (आनन्द तत्त्व) है।

5. उदात्त पात्र :-

महाकाव्यों का धीरोदात्त या धीर ललित पात्र कामायनी में दर्शित नहीं होता। मनु के द्वारा मानव चेतना का विकास बताया गया है।

मनु विलासिता में मग्न देव जाति का प्रतीक है, जो मानव जाति का मूल पुरुष माना जाता है। चाहे मनु देव जाति का हो, उस में अनेक प्रकार की कमियाँ दिखाई देती हैं क्यों कि कामायनीकार जयशंकर प्रसाद ने उसका चित्रण सामान्य मानव के रूप में किया था। मनु अहंकार, स्वार्थ, कामलोलुमता, अस्थिरता आदि हीन प्रवृत्तियों पर खडा था। धीरे-धीरे उन से मुक्त होकर वह समरसता या कैलास सिद्धि पर जाकर आनन्द तत्त्व में लीन होता है। वह हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर बैठकर भीगे नेत्रों से प्रलय प्रवाह देखा रहा था। दु:ख में उसे प्रकृति जड और चेतन रूप में दिखाई देती थी।

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर
बैठ शिला की शीतल छाँह
एक पुरुष भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह।

वही मनु काव्य के समापन में कैलास गिरि के मानसरोवर के पास ध्यान मग्न होकर बैठा रहता है जहाँ समरस भावना ही होती है। वह एक सारस्वत नगर है - समरस नगर है।

कामायनी की नायिका श्रद्धा-विकास का प्रतीक, हृदय को प्रतीक और कामायनी नाम से कवि भी उसे बुलाते हैं। श्रद्धा पात्र का आगम कवि मनोहर रूप में करते हैं। वह हृदय की अनुकृति है और गाँधार देश की राजदुहिता है। वह विश्वास की पात्र है। श्रद्धा का अर्थ - विश्वास रखना है। चिन्ता के भार से गम्यहीन मनु को वह कर्म निष्ठ बनाती है, चेतना का मार्ग बनाती है और आत्म समर्पण करके संसृति की निष्ठा पर ले जाती

है। वह दया, ममता, विश्वास, कर्मण्य और सब से बढ़कर जीवन में असफल मनु (मन) को अंत में शिवत्व पर ले जाती है।

वह कामायनी जगत की

मंगल कामना अकेली।

इसीलिए, महाकवि जयशंकर प्रसाद हर नारी को श्रद्धा का रूप मानते हैं – ''नारी तुम केवल श्रद्धा हो।''

कामायनी का एक मुख्य प्रधान पात्र इडा है जो बुद्धि की प्रतीक है। बुद्धि के बिना मानव चेतना का विकास हो नहीं सकता। इन तीनों पात्रों के अलावा देव, पशु, सोमलता, असुर पुरोहित, आकुलि और किलात् आदि पात्रों का सृजन कामायनीकार ने किया है। सारे पात्रों के मन को समरसता प्राप्त कराना ही है।

6. शैली की उदात्त योजनाः-

कामायनी की भाषा तत्सम प्रधान होकर चित्रात्मक है। बिंबयोजना में प्रसाद जी की कलम रस पुष्ट विधान में बढ़ती है। श्रद्धा के मनु के पास आने का चित्र देखिए –

नील परिधान बीच सुकुमार

खुल रहा मृदुल अधखुला अंग

खिला हो ज्यों बिजली का फूल

मेघवन बीच गुलाबी रंग।

कवि में मनन, चिन्तन, संवाद, स्वगत, स्वप्न,हृश्य विधान आदि की पिरकल्पना होती है। महाकाव्य की व्यंजना कामायनी में मूर्तमान हुई है। प्रलय वर्णन, मनु के अहंकार का वर्णन, घटनाओं का संविधान आदि अन्तर्मुख होकर चलते हैं।

सब से बढ़कर काश्मीर शैवागम– दर्शन प्रणाली में ढ़ालना महाकवि जयशकर प्रसाद जी की शैली की भव्यता है।

7. उपसंहार :-

कामायनी अधुनिक महाकाव्यों का महाकाव्य कह सकते हैं। भौतिक कथागमन, भौतिक स्तर पर पात्रों का चित्रण तथा संघर्ष कामायनी में नाम मात्र भी नहीं हैं। कथा आदि भौतिक है लेकिन कविवर जयशकर प्रसाद ने अध्यात्मिक स्तर पर और प्रतीकात्मक स्तर पर मानवीय भावनाओं को रुपान्वित किया है। पात्र प्रतीकात्मक हैं। कथा रुपात्मक है। एहिक पात्रों को आधार बनाकर चलनेवाली कामायनी मानव चेतना के

विकास का महाकाव्य है। हिन्दी साहित्य के लिए ही नहीं; विश्व साहित्य जगत केलिए कामायनी एक अनुपम तथा अदभुत उपलब्धि है।

महाकवि जयशंकर प्रसाद की तपस्या का महान प्रतिफलन है– कामायनी महाकाव्य। कामायनी छायावाद युग का सर्वोत्कृष्ट महाकाव्य है।

❊ ❊ ❊

Lesson Written

- डॉ. शेख मौला अली

2. 2 कामायनी में व्यक्त दर्शन की समीक्षा

रुपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. काथा में रूपक
3. कामयनी के प्रमुख पात्र
4. प्रकृति
5. उपसंहार

1. प्रस्तावना :-

तुलसीदास के बाद जयशंकरप्रसाद जैसा कवि कोई अन्य नहीं जन्मा और भारतीय संस्कृति में रामचरितमानस के बाद कामायनी जैसा महान काव्य कामयानी कोई अन्य नहीं है। छायावाद का उत्तम महाकाव्य है। इस में कामायनी, वैवस्व वधु, नारी, श्रद्धा का जीवान चरित्र है। यह काव्य आदि मानव वैवस्वत मनु पर लिखा हुआ है। प्रकृति में भगवान की छाया को देखना छायावाद है। प्रकृति में भागवान को देखना ही रहस्यवाद है। मानवीय भावनाओं को बनाकर मानवीय भावनाओं के सूक्ष्म अनुशीलन पर कामायनी की रचना हुई। प्रकृति में स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है – कामयनी छायावाद का अद्वितीय अतुलित, असामान्य महाकाव्य है।

कवि यहाँ काश्मीर शैवागम का दर्शन कराते हैं। यहाँ वृषभ – शिव जी का वाहन और हम को अन्न प्रदान करने वाला जीव है। कामायनी में सतत सहचर जीवन के बारे बताया –

नर– पुरुष

नारी – प्रकृति

कामायनी में नर और नारी के चिर जीवन का चित्रण हुआ है। उनका सह जीवन बताया गया है। पुरुष और प्रकृति का नित्य और साहचर्य बताया है।

मनु (मन), श्रद्धा (हृदय), इडा)(बुद्धि) या (ज्ञान) इन तीनों के समन्वय से मानव बनता है जो मनु और श्रद्धा का पुत्र है। रूपक तत्व - जीव जब तपस्या में लीन हो जाता है वह जड से चेतन बन जाता है।

प्रकृति में मानवों की भावनाओं को प्रतिबिंबित करना मानवीकरण है। कामायनी जयशंकर प्रसाद की सांस्कृतिक गरिमा का मूर्त रूप है।

कामायनी में आद्यंत रूपक तत्त्व व्याप्त हुआ है। भौतिक घटनाओं का सूक्षम रूप भी प्रस्तुत हुआ है। दार्शनिक, नैतिक, राजनीतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक आदि विषयों का सूक्ष्म अनुशीलन कामायनी में रूपान्वित किया गया है।

2. काथा में रूपक :-

कामायनी की कथा अद्यन्त रूपक है। नायक वैवस्वत मनु ही है। यह मन का रूपक है। मन और श्रद्धा (हृदय) के समन्वय का विकास कामायनी में बताया गया है। अहंकारवश मनु श्रद्धा पर आक्रमण करता है। श्रद्धा मनु में विश्वास भरकर उसे कर्मठ बनाती है और कार्योन्मुख करती है। फल स्वरुप मानव का जन्म होता है। फिर मनु (मन),श्रद्धा (हृदय) को त्यागकर इडा (बुद्धि) के संसर्ग में जाता है। अन्त में सारस्वता प्रदेश में वह तपस्या में लीन होता है। श्रद्धा उसका साथ देती है। इडा मानव को लेकर वृषभ के साथ और प्रजा के साथ हिमालयों की तराइयों में सारस्वत नगर में प्रवेश करती है।

कवि जयशंकर प्रसाद जी ने स्वयं बताया है। ''यह अख्यान (कथा) इतना प्राचीन है कि इतिहास में रूपक का भी अतभुत मिश्रण हुआ है। मनु ,श्रद्धा और इडा को सांकेतिक अर्थ में ले तो मुझे कोई अपत्ति नहीं। मनु - मन का पक्ष है, श्रद्धा - हृदय पक्ष है और इडा - बुद्धि पक्ष।''

3. कामायनी के प्रमुख पात्र :-

कामायनी के प्रमुख पात्र - मनु, श्रद्धा और इडा हैं। मनु - मनोमय कोश का जीब माना जाता है। मनु का सही अर्थ मन और चेतना है - 'मन्यते अनेन इति मनुः।' मनु का मूल लक्षण अहंकार है।

मैं हूँ यह वरदान सदृश क्यों

लगा गूँजने कानों में।

जय जीवन का वरदान मुझे

दे दो रानी अपना दुलार।

मानशीलता अहंकार का लक्षण है। कभी वह संकल्प और विकल्प में मानव को बहा ले जाती है। उस में सदा स्वार्थ- भावना, वासना, काम आदि लक्षण होने पर मानव अपने साथी (श्रद्धा) के प्रति विश्वासघात भी करता है।

कामायनी का दूसरा पात्र श्रद्धा है, जो हृदय का प्रतीक है। श्रद्धा प्रसाद जी के अनुसार विश्वासमई रागात्मिका वृत्ति है। वह गन्धर्व देश की राज दुहिता है। अपार विश्वास, उत्त्साह, प्रेरणा, सहानुभूति, ममता, मधुरिमा, त्याग, क्षमा आदि सतगुणों का वह समन्वय रूप है।

हृदय की अनुकृति बाह्य उदार

एक लंबी काया उन्मुक्त

वह मन की वेदना को दूर करने में अपने सर्वस्व को त्याग देती है। वह मन को कर्मठ बनाते हुए कहती है – शक्तिशाली हो, विजयी बनो।

कामायनी का तीसरा मुख्य मात्र है – इडा। यह बुद्धि की प्रतीक है। यह मन को तर्कयुक्तबनाकर अग्रसर होने केलिए प्रचोदित करती है। वह नितान्त बौद्धिक है। जीवन की अखंडता के स्थान पर वह वर्ग विभाजन और अभेद के स्थान पर भेद उत्पन्न करती है।

इनके अलावा श्रद्धा और मनु का पुत्र कुमार – नव मानव का प्रतीक है; पिता मनु से मनन शीलता, माता श्रद्धा से हृदय तत्व और इडा से बुद्धि तत्व वह प्रप्त करता है। इसके बाद असुर पुरोहित आदि आसुरी वृत्तियों के प्रतीक हैं। सारे देवता – नाडियों के प्रतीक हैं। वृषभ – धर्म का प्रतिनिधि है।

वृष धवल धर्म का प्रतिनिधि

सोमलता भोग का संकेत है।

4. प्रकृति :-

जल प्लावन पृथ्वी या धरती के इतहास में अत्यन्त प्राचीन है। मानव अतिविलासिता में डूबजाने के कारण वह व्यथित होकर माया में डूब जाता है। भाव- लोक, कर्म-लोक तथा ज्ञान- लोक त्रिलोक हैं। इन तीनों में सामजस्य होना मुश्किल है।

एक दूसरे से नमिल सके
यह विडंबना है जीवना की

मानसरोवर, कैलास गिरि, सारस्वतनगर आदि आनन्दमय कोश के प्रतीक है।

समरस थे जड या चेतन
सुन्दर साकार बना था

मानसरोवर के पास श्रद्धा के साथ मनु बैठकर तपस्या में लीन होना योग साधना है जो अमृत की सिद्धि है, अहंकार रहित होकर जीव मुक्तावस्था में पहुँचता है। वहाँ सहस्रदल कमल खिलता है।

जीव का मूलाधिर से निफलकर इडा और श्रद्धा नडियों को साथ लेकर सहस्रदल कमल तक (सहस्ार तक) पहुँचकर अमृतत्व की सिद्धि प्राप्त करना कामायनी का रुपक तत्व है।

5. उपसंहार :-

कथा योजना, पात्र परिकिल्पना, शैली की संरचना, घटनाओं का अनुक्रम, दार्शनिक परिवेश आदि में कामायनी का रूपक तत्त्व अणु- अणु में पल्लवित होता है। भाववृत्ति, कर्म वृत्ति और ज्ञान वृत्ति का सामंजस्य स्थापित करना कामायनी दर्शन है।

❈ ❈ ❈

2. 3

कामायनी में 'श्रद्धा सर्ग' की भावगत तथा शैलीगत समीक्षा

कामायनी में श्रद्धा सर्ग की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

रूपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. काथानक
3. नवीन मन्वन्तर का आरम्भ
4. सौदर्य चित्रण
5. नाटकीय संरचना
6. अलंकर संयोजन तथा भाषा
7. उपसंहार

1. प्रस्ताक्ना :-

जीवन का मूल तत्व श्रद्धा है। यह सर्ग कामायनी महाकाव्य कथा - श्रृंखला की एक अनिवार्य कडी है। संपूर्ण कथानक का आघारभूत तत्त्व इसी सर्ग में विहित है। श्रद्धा ही कामायनी है। वह काम की पुत्री है। वह कुतूहल की मूर्ति है। नायक - नायिकाओं का प्रथम मिलन इसी सर्ग में होता है। कामायनी महाकाव्य रूपी सुन्दर माला में श्रद्धा सर्ग एक अनमोल मणि है। मनु और श्रद्धा का मिलन एक मन्वन्तर का शुभारम्भ है। श्रद्धा मनु से स्पष्ट कहती है-

"बनो संसृति के मूल रहस्य।"

प्रसादजी श्रद्धा का मनोवेज्ञानिक रूप अकित करते है। काव्य में श्रद्धा एक मानसिक प्रवृत्ति के रूप में प्रस्तुत होती है। वह मनु को सृष्टि के उद्देश्य का बोध कराती है-

और यह क्या तुम सुनते नहीं

विधाता का मंगल वरदान

'शक्तिशाली हो, विजयी बनो'

विश्व में गूँज रहा जय गान।

2. कथानक :-

तेजस्वी किन्तु शांत,थके तथा दुखी मनु को पर्वतीय एकांत में श्रद्धा देख कर जिज्ञासा प्रकट करती है - "सृष्टि - सागर के किनारे तरंगों से फेंक हुई मणि के समान मौन होकर निर्जन का अमिषेक करनेवाली तुम कौन है?" मन को श्रद्धा की वाणी मधुकरी का गुंजार प्रतीत होती है। श्रद्धा के शरीर, परिधान में अघखुले अंग, मुख, अधरों की मुस्कान और स्पंर्श पर मंनु विविस कल्पनाएं करते है। उसकी छवि पर मुग्ध हो मनु पूछते है- 'तुम कौन हो?'

श्रद्धा उन्हें अपना परिचय गाधार नरेश की प्यारी संतान के रूप मे देती है। बह मनु के अदसाद में धैर्यपूर्वक सवेदना प्रकट करती है। वह एक दार्शनिक की भाँति विश्व के विकास का रहस्य उद्घाटित करती है। जीवन की सत्यता, नवीनता, तथा परिवर्तनशीलता का समर्थन कर कर्मशील बनाने केलिए मनु को वह उद्बोधन करती है। श्रद्धा **देव** पर मानवता के राज्य का निर्माण करने के लिए अभिप्रेरित करती और मानवता की श्रीवृद्धि केलिए मंगल कामना करती है।

3. नवीन मन्वन्तर का आरम्भ :-

श्रद्धा सर्ग में मनु और श्रद्धा का मिलन होता है, जो नवीन मन्वन्तर का आरम्भ है। मनु श्रद्धा का मूर्तिकरण दर्शात है-

और देखा बह सुंदर दृश्य

नयन का इन्द्रजाल अभिराम

कुसुम - भव में लता समान

चंद्रिका से लिपटा घनश्याम।

श्रद्धा मनु की दुर्वलता पहचान कर उनके प्रकार से मानव जीवन की सार्थकता समझाती है। दुख की रात बीत जाने पर वह नवल प्रभात विकसित होने की बात बाताती है। वह सुख और दुख से द्वंद्व से ही सृष्टि के विकास होने का सत्य कह उठती है। व्यथा से ही सुख पाप्ति होती है।

यही दुख - सुख विकास का सत्य

यही भूमा का मधुमय दान

× × × ×

व्यथा में नीली लहरों बीच

बिखरतें सुख मणि- गण द्युतुमान।

दु:ख तपस्या है और तपस्यापूर्ण जीवन आनन्दमय होता है। थकावट क्षणिक होती है और आनन्द सशक्त होता है। विश्व सदा परिवर्तन तथा विकासशील है। इस तथ्य को हृदयंगम कर मानव को सदा प्रगतिशील तथा विकासशील होना चाहिए : मनु की क्रियाशीलता में श्रद्धा अपना सहयोग प्रदान करने केलिए तत्पर रहती है। वह मनु के सामने अपना आत्म समर्पण करती है।

समर्पण लो सेवा का सार

सजल संस्कृति का यह पतवार

आज से यह जीवन उत्सर्ग

इसी पद वल में विगत दिकार।

श्रद्धा सर्ग में नवीन मानव - संस्कृति के निर्माण की प्रेरणा है। वासनामय देव संस्कृति विध्वंस होने पर मनु में निराशा के कारण जडता आ बैठती है। वे निराश एवं भयभीत होते हैं। श्रद्धा नवीन विजथिनी मानव संस्कृति के विकास की प्रेरण देती हुई कहती है- ''सष्टि के आदि पुरुष बनो। तुम्हारे द्वारा मानव - संसृति की बेलि फैल कर विश्व भर मानवता की सुरभि फैल जायेगी।''

बनो संसृति के मूल रहस्य

तुम्ही से फैलेगी यह बेल,

विश्व भर सौरभ के भर जाय

सुमन के खोलो सुन्दर खेल,

श्रद्धा सर्ग में कवि मानवता की विजय का संदेश देकर नये विकास की आकांक्षा रखते हैं। विजय का संदेश स्पष्ट रूप से व्यक्त हुआ है। सर्ग के अंत में कवि उद्घटित करते हैं-

विजयिनी मानवता हो जाय।

यहीं नवीन मन्वंतर का विकास प्रारम्भ होता है। प्रसादजी अपनी विश्व कल्पना की सुन्दर तथा महान अनुभूति यहाँ व्यक्त करते है। श्रद्धा सर्ग में मानवता के नव विकास की कामना प्रकट करते हैं। कामायनी का मूल संदेश विजयवाद श्रद्धा सर्ग में स्पष्ट रूप से व्यक्तहुआ है।

4. सौन्दर्य - चित्रण :-

श्रद्धा सर्ग में विषयवस्तु की प्रधानता के साथ काव्यकला की विशेषता का विशेष महत्त्व है। श्रद्धा कामगोत्रजा है। कामायनी है। कवि श्रद्धा का सौन्दर्य चित्रण अत्यंत सूक्ष्म, भावत्मक तथा उत्कृष्ट रूप से करते हैं। श्रद्धा की वाणी मनु को मधुकरी का मधुर गुंजार लगती है -

सुना यह मनु ने मधु गुंजार
मधुकरी का सा जब सानंद।

मनु सहर्ष सिर उठाकर निरखने लगते हैं-

निरखने लगे लुटे से, कौन-
गा रहा यह सुन्दर संगीत ?

श्रद्ध का सौंदर्य वर्णन एक दृश्य के रूप में हुआ है जैसे तुलसीदास ने सीता को - ''सुन्दरता को सुन्दर करहि'' कहा है। श्रद्ध का रूप एक सुन्दर इन्द्रजाल कहा गया है-

नयन का इन्द्रजाल अभिराम।

श्रद्धा की मधुमय वाणी तथा अनुपम रूप सैदर्य मनु के हृदय को झंकृत कर देते है। श्रद्धा की कोमल, मधुर तथा सुवासित देहकांति का मूर्तिकरण करते हुए कवि कहते हैं-

कुसुम कानन अंचल में मन्द
पवन प्रेरित सौरभ साकार

रचित परमाणु पराग शरीर

खडा हो, ले मधु का आधार।

नीले रोमोंवाले चमडे के वस्त्र के बीच में श्रद्धा का अधखुला कोमल शरीर, मेघों के समूह के बीज गुलाबी रंग धारण किये बिजली के फूल के रूप में बताया गया है–

नील परिधान बीच सुकुमार

खुल रहा मृदुल अधखुला अंग

खिला हो ज्यों बिजली का फूल

मेघ - वन बीच गुलाबी रंग।

श्रद्धा के रूप सौन्दर्य के चित्रण करने में कवि रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का सुन्दर समावेश करते हैं।

5. नाटकीय संरचना :-

श्रद्धा सर्ग का प्रारम्भ नाटकीय संरचना से हुआ है। श्रद्धा प्रश्न करती है–

''कौन तुम ?''

समापन भी श्रद्धा के विजयवाद की आकांक्षा से ही होता है–

विजयिनी मानवता हो जाय।

हिमगिरि पर बैठे मनु श्रद्धा के कोमल स्वर से आकर्षित हो सहर्ष सिर ऊपर उठाकर देखने का दृश्य अत्यंत नाटकीय है। फिर श्रद्धा का मनोहर रूपदर्शन तथा उन दोनों के बीच वार्तालाप अत्यंत नाटकीय विधान में हुआ है। प्रश्न और समाधान तथा विवरण होता रहता है। कथांश को जोडनेवाली केवल पाँच पक्तियाँ ही प्रंयुक्तहुई हैं –

(1) सुना यह मनु ने मधु गुंजार

(2) कहा मनु ने

(3) लगा कहने आगंतुक व्यक्ति

(4) लगे कहने मनु सहित विषाद

(5) कहा आगंतुक ने सस्नेह :

इन के अलावा कुछ इतिवुत्तत्मक पक्तियों भी प्रयुक्त हुई हैं। सारा सर्ग कथोपकथनात्मक शैली में अग्रसर होता है। संलाप – शैली प्रयुक्त होने के कारण श्रद्धा सर्ग में नाटकीयता आ गयी है।

अरे, तुम इतने हुए अधीर।

× × × ×

शक्तिशाली हो, विजयी बनो।

× × × ×

डरो मत अरे अमृत संतान ।

आदि अभिभाषणों में श्रद्धा के वचनों के द्वारा कवि मानव चेतना के विकास का सकेत करते हैं। उपर्युक्त संलाप बिलकुल नाटकीय शैली में ढ़ले हैं।

6. अलकार संयोजना तथा भाषा :-

अलंकारों के प्रयोग की दृष्टि से भी श्रद्धा सर्ग का विशेष महत्व है। उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

चद्रिका से लिपटा घनश्याम

× × × ×

खिला - हो ज्यों बिजली का फूल

आदि वर्णनों में उपमालंकर प्रयुक्त हुआ है।

‘मेघ – वन’, ‘कुसुम – वैभव’, ‘घन- शावक’ आदि प्रयोगों में रूपकालंकार का समावेश हुआ है। इनके अलावा उत्प्रेक्षा, मानवीकरण आदि अलंकारो का प्रयोग हुआ है।

श्रद्धा सर्ग की भाषा परिष्कृत तथा परिमार्जित है। भाषा में सहज संगीतात्मकता आयी है। मनु का पूछना और श्रद्धा का परिचय देना सहज होकर कलात्मक है। परिचय देना एक कला है जो श्रद्धा सर्ग में प्रयुक्त हुआ है। कवि ने यह संचरना विधान वाल्मीकि से ग्रहण किया जैसा लगता है। सर्ग की भाषा अत्यंत मधुर तथा प्रभावोत्पादक है।

7. उपसंहार :

श्रद्धा सर्ग में एक नवीन दर्शन की स्थापना हुई है। उसका महाकाव्य में विशेष महत्त्व है। श्रद्धा का मनोवेज्ञानिक और दार्शनिक निरूपण हुआ है। कविवर प्रसाद इस सर्ग में श्रद्धा का अत्यंत उदात्त चित्र अंकित करते हैं। उस में अनेक मानवीय गुणों का समावेश हुआ है। प्रसाद ने इस सर्ग से श्रद्धा का जो वर्णन किया है उसका व्यापक प्रसार संपूर्ण काव्य में होता गया है। कुछ विद्वान श्रद्धा सर्ग को कामायनी महाकाव्य का मेरुदण्ड कहते है।

Lesson Writer

- डॉ. शेक मौला आली

राम की शक्ति पूजा

- सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

3. 1

प्र. राम की शक्ति पूजा की समीक्षा

रुपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. कथावस्तु
3. दार्शनिक विचारधारा
   (क) शैव धर्म
   (ख) शात्केय विचारधारा
   (ग) योग
4. उपसंहार

1. प्रस्तावना :-

हिन्दी छायावादी काव्यधारा में सूर्यकान्य त्रिपाठी निराला जी का विशिष्ट स्थान है । वे प्रकृति के महान उपासक हैं। प्रकृति में वे परमात्मा को देखते हैं और परमात्मा में प्रकृति को देखते हैं। उनकी कविता रहस्यवाद में पल्लवित होती है और फिर कभी प्रगतिवाद में परिवर्तित होती है।

निराला जी बंगाल के रहनेवाले है। बंगाल में देवी की उपासना प्रधान होती है। निराला जी भी दुर्गा के उपासक हैं। उनके अनुसार सारा विश्व दुर्गा की दया, ममता, करुणा आदि से परिपूर्ण है। देवी सर्वशक्ति संपन्ना है। शिव जी भी देवी की महत्ता के कारण शक्ति संपन्न हुए हैं।

राम की शक्ति पूजा में सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला शक्ति की महत्ता रुपान्वित करते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार रावण का वध करने केलिए राम ने किसी शक्ति की पूजा नहीं की है। लेकिन शक्ति(देवी) की महत्ता और भी बढ़ाकर दिखाने केलिए निराला जी ने राम की शक्ति पूजा की रचना की।

2. कथावस्तु :-

राम और रावण का युद्ध चल रहा था। राम वडे ही संयमी हैं और विवेकपूर्ण भी हैं। वे महान वीर भी हैं। लेकिन रावण की वीरता के सामने वे ठहर नहीं पा रहे हैं। रावण अपराजय रहा है।

रह गया राम- रावण का अपराजेय समर

सारे वानर युद्ध के कारण विचलित हो रहे हैं। रावण लोहित (लाल) लोचन होकर और भी गर्जन कर रहा है। सुग्रीव, अंगद, गवाक्ष, आदि वानर मूर्छित हो गये हैं। लक्ष्मण चिन्ताग्रस्त हुआ है। हनुमान जी रावण पर आक्रमण करने के लिए युक्त होते हैं। माँ अंजना देवी आकर हनुमान जी को सचेत करती है कि –'जब तुम बालक थे तब सूर्य मण्डल पर तुमने आक्रमण किया। अब पुन: उस प्रकार की बालक चेष्टा न करो।' राम पहाड के ऊपर श्वेत मणि शिला पर बैठे हुए हैं।

राम सोचने लगते हैं कि उन्होंने ताटका, सुबाहु, विराध, खर, दूषण आदि अनेक राक्षसों का अन्त किया है। वे सीता को याद करके चिन्ताग्रस्त रहते हैं। रावण अट्टहास करके हँसता रहता है। सीता के नेत्रों से आँसू भी उभर आ जाते हैं।, वानरों की शक्ति न समा रही है। विभीषण भी वानरों की निस्सहायता पर वेदना प्रकट करता है। वानरों में सब से वृद्ध जाम्बवान राम को सचेत करते हुए कहते हैं- राम तुम देवी का स्मरण करो और शक्ति की कल्पना करो फिर उसकी पूजा करो।

राम हनुमान जी को बुलाते हैं और एक सौ आठ नील कमल लाने केलिए कहते हैं। तब वे दश भुजाओं वाली दुर्गा, महिषासुर मर्दिनी की आराधना में बैठ जाते हैं। वे आठ दिन तक दुर्गा माई की आराधना में बैठकर एक- एक कमल माँ के चारणों में अर्पित करते जाते हैं। सारे पुष्पों के बाद अन्त में एक पुष्प दिखाई नहीं देता तब राम कहते हैं, – हे दुर्गा माता बचपन में मेरी माँ मुझे राजीव नयन कहती थी। अब एक नील कमल दिखाई नहीं दे रहा है। अब कमल के स्थान पर मेरा दक्षिण नेत्र ले लो।'

कहती थी माता मुझे सदा राजीव - नयन
जो नील - कमल हैं शेष अभी यह पुरश्ररण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन।

राम अपना नेत्र निकालने केलिए तैयार होते हैं। दुर्गामाई का दर्शन होता है। उनके साथ लक्ष्मी, गणेशजी, कार्तिक और शंकर जी भी दर्शाते हैं। राम को विजयी होने का वर देकर राम के बदन में लीन हो जाती है।

3. दार्शनिक विचारधारा :-

राम की शक्तिपूजा में शैवधर्म, शात्तेय विचार धारा और योग का समन्वय हुआ है।

(क) शैव धर्म :-

भारत में शैव धर्म और वैष्णव धर्म दो मार्ग दिखाई देते हैं। शैव धर्म आराधना प्रधान है जहाँ वैष्णव धर्म अर्चना प्रधान है। यहाँ निराला जी वैष्णव धर्म पर शैव धर्म का आधिपत्य बताना चाहते हैं। उनके अनुसार –

'शिवं करोति इति शिवः'

शिव का अर्थ आनन्द प्रदान करना है। शात्तेय मार्ग शैव धर्म का भाग है। इसलिए निराला जी यहाँ शैव दर्शन प्रकट कर रहे हैं।

(ख) शात्तेय विचारधारा :-

दर्शन में पुरुष तत्त्व और प्रकृति तत्त्व दो विचार धाराएँ हैं। पुरुष तत्व – परमात्मा नारायण हैं। प्रकृति तत्व- शक्ति या नरायणी है। आराधना विधान में प्रकृति तत्व की उपासना और पुरुष तत्व की उपासना दोनों चलते हैं। निराला जी छायावाद के प्रमुख कवि हैं। छायावादी विचार-धारा में प्रकृति तत्त्व अत्यन्त मनोज्ञ तथा रसाभिव्यक्तिमें अभिव्यजित होता है। इसलिए प्रकृति तत्त्व के उपासक के रुप मे निरालाजी 'राम की शक्तेपूजा' कविता यहाँ प्रस्तुत करते हैं।

(ग) योग :-

निराला जी यहाँ जीव तत्त्व पर चर्चा कर रहे हैं। प्रति जीव में या मानव में सतगुण और दुर्गुण दोनों होते हैं। दर्शनिक परिभाषा में ये ही लक्षण रामत्व और रावणत्व हैं। रामत्व दैवी संपत्ति हैं और रावणत्व आसुरी संपत्ति है। हर जीव में इन दोनों लक्षणों के बीच में संघर्ष चलता रहता है। आसुरी संपत्ति, दैवी संपत्ति को सदा कुचलती रहती है। दैवी संपत्ति पहले दबती है फिर किसी उपासना के आधार पर या उपासना के वल पर आसुरी संपत्ति पर विजय पाती है। 'निराला जी ने उस उपासना को राम की शक्तिपूजा रखा।'

4. उपसंहार :-

राम की शक्ति पूजा योग विद्या है, शाक्तेय दर्शन है और शैव दर्शन भी है। रामायण महाकाव्य है। महाकाव्य के एक अंश को लेकर निशला जी ने छायावादी विचारधारा में एक प्रकार से महाकाव्य ही रचा । कथा प्रवाह में, चरित्र- चित्रण में, भाषा के संविधान में और शैली के उपक्रम में निराला जी की रचना राम की शक्ति पूजा, निराली है।

निराला जी स्वयं महान योगी हैं। वे बडे उपासिक हैं। शक्ति की पूजा - एक सौ आठ नील कमलों से राम करते हैं। ये कमल वैसे एक प्रतीक मात्र है। एक- एक कमल देवी की उपासना का बीजाक्षर है। निराला जी अपनी तपस्या को बीजाक्षर संयुत राम की शक्ति पूजा में निभाया है।

3. 2

'राम की शक्ति पूजा' के काव्य सौंदर्य का मूल्यांकन

1. प्रस्तावना :-

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला हिन्दी साहित्य के 'युगान्तकारी कवि' हैं। उनकी रचनाओं में तत्कालीन मानव की पीडा, परतन्त्रता एवं परवशता के प्रति उत्पन्न तीव्र आक्रोश की ध्वनि सुनाई पडती है और विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करने की तीव्र गर्जना सुनाई पडती है । वे अपनी ओजस्वी कविता द्वारा ज्वालामुखी का विस्फोट करते हैं।

राम की शक्ति पूजा निराला जी की सर्वोत्कृष्ठ रचना मानी जाती है । इस काव्य में निरालाजी ने राम को परब्रह्म न मानकर एक वीर पुरूष के रूप में प्रस्तुत किया है। रावण का अन्त करने के लिए महाशक्ति की आराधना करनी पडती है । महाशक्ति की आराधना के द्वारा कवि ने तत्कालीन समाज को भी उन्होंने एक ऐसा संकेत दिया है कि राम की तरह एकाग्रचित्त होकर देशवासियों के हृदयों में महाशक्ति की आराधना द्वारा सुसंगठित हो 'शक्ति संचय' करके 'शक्ति' की सिद्धि प्राप्त करनी होगी। तभी भारतवासी सीता जैसी स्वतन्त्रता का उद्धार कर सकते हैं। इस काव्य में महाकाव्य की तरह उदात्त कल्पना है, प्रबन्ध पटुता है और कला कौशल है।

2. कथावस्तु :-

'राम की शक्ति पूजा' की कथावस्तु राम रावण युद्ध से सम्बन्धित है । राम अपनी पत्नी की विमुक्ति के लिए वानर, रीछ आदि की सेना के साथ लंका पर चढाई करते हैं। लक्ष्मण, नल, नील, हनुमान, सुग्रीव, अंगद, जाम्बवान, विभीषण आदि महान योद्धा राम की सेना में हैं। रावण के अनेक वीर मारे जाने पर रावण शक्ति की पूजा कर अधिक बल संचय करता है । फलत: राम के शस्त्रास्त्रों का रावण पर कोई प्रभाव नहीं रहता । एक दिन घोरयुद्ध में सन्ध्या समय रावण के भयंकर प्रहार से सुग्रीव, अंगद, नल, गवाक्ष आदि अनेक वानर वीर मूर्च्छित हो जाते हैं। लक्ष्मण के बाणों के प्रहार का भी रावण पर कोई प्रभाव नहीं पडता। केवल हनुमान का हुंकार सुनाई पडता हैं । सन्ध्या होने पर दोनों दल अपने अपने शिबिरों को लौट जाते हैं। राम भी खिन्न और उदास हो जाते हैं। प्रमुख सेनापति उनके पास आ बैठते हैं । अमावास्या का घना अन्धकार चारों ओर फैल जाता है। राम को विश्वास सा होता है कि सीता का उद्धार होना असम्भव है और रावण को जीतना असंभव है ।

राम, सीता का स्मरण करते हैं । पुष्पवाटिका का मिलन, धनुर्भंग एवं विवाह की घटनाएँ राम के हृदय में एक नया उत्साह उत्पन्न करते हैं । वे अपने दिल में बाणों का स्मरण करते हैं और - शक्ति का भी ध्यान आता है । राम के अश्रुपूरित नेत्रों को देखकर हनुमान रावण पूजित शक्ति को आत्मसात करने के लिए संपूर्ण आकाश को निगलने का प्रयत्न करते हैं । शिव प्रबोधित शक्ति अंजना के रूप में हनुमान को समझती हैं और हनुमान शान्त होते हैं।

राम की खिन्नता देख कर जाम्बवान शक्ति की मौलिक कल्पना कर युद्ध करने में संलग्न होते हैं । राम की आज्ञा पर देवीदह सरोवर से एक सौ आठ कमल पूजा के लिए लाते हैं। राम एकाग्रता के साथ शक्ति की आराधना में लीन हो जाते हैं। पाँच दिन बीत जाते हैं। छठे दिन राम का मन योगियों के आज्ञा नामक चक्र पर पहुँच जाता है। आठवें दिन राम के समीप शक्ति पर चढ़ाने के लिए एक कमल मात्र रह जाता है और वे सहस्रार को पार करने के लिए भी उद्यत हो जाते हैं। दो पहर की रात बीतने पर दुर्गामाई साकार रूप में प्रकट होकर पूजा का अन्तिम कमल उठा ले जाती है। हाथ बढ़ाने पर राम को कमल नहीं मिलता। वे अत्यन्त खिन्न हो, जानकी के उद्धार की बात सोचने लगते हैं। अचानक उन्हें स्मरण आता है कि बचपन में माता कौसल्या उन्हें 'राजीव-नयन' कहा करती थीं। तुरन्त राम हाथ में बाण लेकर कमल के स्थान पर अपना दाहिना नेत्र अर्पित करने के लिए उद्यत होते हैं।

ब्रह्माण्ड कम्पित होता है, तुरन्त देवी प्रकट हो जाती है और ''होगी जय। होगी जय! हे पुरुषोत्तम!'' कहती हुई वह अनन्त महाशक्ति राम के शरीर में विलीन हो जाती हैं।

2. कथानक के आधार :-

'राम की शक्ति-पूजा' कथानक पौराणिक है। युद्धक्षेत्र में राम की निराशा का मूल आधार वाल्मीकिं रामायण, अध्यात्म रामायण, रामचरितमानस आदि रामकाव्यों में विद्यमान है। वस्तुत: रावण के 'अण्टघण्टा शक्ति' के प्रहार से लक्ष्मण के मूर्छित हो जाने पर राम नैराश्य रोदन करते हैं। वे कहते हैं ''बिना लक्ष्मण के मैं न रावण को जीत सकता हूँ और न सीता का उद्धार ही कर सकता हूँ। ''राम और कहते हैं,'' हर देशों में पत्नी (कलत्राणि) मिल सकती है, हर देश में मित्र तथा बन्धुजन मिल सकते हैं किन्तु सहोदर, भ्रता किसी भी देश में प्राप्त नहीं होता।''

देशे-देशे कलत्राणि, देशे-देशे च बान्धवाः।

तंतु देशे न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः॥

निरालाजी ने इस प्रसंग को परिवर्तित कर दिया है। कथानक पाँच भागों में विभक्त किया जा सकता है - (1) राम-रावण (2) राम का नैराश्य (3) हनुमान का महाकाश को निगलने का प्रयत्न करना। (4) राम की शक्ति की उपासना और (5) फलप्राप्ति।

4. प्रतीक योजना :-

'राम की शक्ति-पूजा' काव्य रामकाव्य की परम्परा में एक नया प्रयोग है। यह युग-चेतना को झकझोरनेवाला सशक्त काव्य है। तत्कालीन समाज में आर्थिक एवं राजनीतिक कारणों से असंतोष व्याप्त था, प्रजा विदेशी दमन-नीति से भयभीत हो निराशाजन्य हुई थी। जनता को प्रोत्साहित कर स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए आशाजन्य सन्देश देना कवि, निराला का उद्देश्य है। राम तत्कालीन देश-भक्त के प्रतीक है तो और राम की सेना देश की स्वतन्त्रता-सेना है।

इस के साथ-साथ राम की शक्ति-पूजा में योगदर्शन की झलक भी व्यक्त होती है। मूलाधार से लेकर षट चक्रों में जीव का संचार बनाया गया हैं। अन्त में आज्ञा चक्र और सहस्रार चक्र का अधिगमन होना बताया गया है।

क्रम-क्रम से हुए पार राम के पंचदिवस,
चक्र से चक्र मन चढता गया ऊर्ध्व निरलस।
× × × ×
संचित त्रिकुटी पर ध्यान द्विदल देवी-पद पर
जाए के स्वर लगा काँपने थर-थर अम्बर।

सम्पूर्ण कथानक का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि कवि निराला ने देवीभागवतपुराण, शिवताण्डव स्तोत्र, शिवमहिमास्तोत्र, वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, रामचरितमानस आदि विविध ग्रन्थराजों से सामग्री उपलब्ध करके 'राम की शक्ति-पूजा' प्रबन्धकाव्य की रचना की है। वाल्मीकि रामायण में युद्धकाण्ड के अन्तर्गत यह प्रसंग भी प्राप्त होता है कि राम रावण का संहार कर न पाते हैं, तो महर्षि अगस्त्य आकर 'आदित्य हृदय' उपदेश करते हैं। इस से भी संकेत मिलता है कि रावण-संहार के लिए राम ने किसी-न-किसी देवी शक्ति की उपासना अवश्य की थी।

5. पात्र तथा चरित्र-चित्रण :-

'राम की शक्ति-पूजा' के सारे पात्र पौराणिक हैं। निरालाजी ने राम, हनुमान एवं विभीषण का चरित्र-चित्रण नवीन विधान से किया है। निराला के राम को एक साधारण युद्धवीर के रूप में प्रस्तुत किया है। राम अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए और अपनी पत्नी सीता के उद्धार के लिए रीछ, वानर, भालू आदि की सेना के साथ लंका पर चढ़ाई करते हैं। विविध प्रयत्नों से भी राम रावण को जीत न सकते हैं। रावण के युद्ध कौशल के सामने राम की सेना ठहर न पाती। अत: राम भयभीत, चिन्तित तथा विचलित हो जाते हैं। राम को जीवन में प्रथमत: अपजय का आभास-सा होने लगता है।

स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर-फिर संशय,
रह-रह उठता ऊग जीवन में रावण जय-जय॥
× × × ×
असमर्थ मानता मन उद्यत हो हार-हार।

(क) राम :-

राम अपना पूर्व तथा अपूर्व पराक्रम याद कर लेते हैं - ताडका, सुबाहु, विराध, खर, दूषण, त्रिशिरा आदि-आदि क्रूर तथा भयंकर राक्षसों का वध किया था। लेकिन अब रावण के सामने उनका पराक्रम तूलिका बन जाता है जिससे उनके नेत्रों में आँसू छलछला आते हैं। रावण का अन्त न होने पर सीता का उद्धार कैसे हो

सकता है? राम को रावण की दैवी-शक्ति के विरुद्ध युद्ध होगा। राम एक साधारण व्यक्ति की भाँति रोते हैं, फिर साहस, दृढ़ता और लगन के साथ युद्ध कौशल प्रदर्शित करते हैं। ने जाम्बवान की सलाह पर शक्ति की आराधना और उपासना में लीन हो जाते हैं। वे योगासन में बैठे हुए अपनी कठोर साधना के बल पर मूलाधार चक्र से लेकर क्रमश: सहस्रार तक सातों चक्रों को पार करते हुए उर्ध्वगमन करते जाते हैं त्रिकुटी में देवी के चरणों का ध्यान करते हुए जप में लग्न होते हैं। उनके जप से सारी लंका कम्पित होने लगता है।

यहाँ राम एक साधक, त्यागी तथा अपना सर्वस्व बलिदान करनेवाले महान पुरुष के रूप में प्रस्तुत हुए हैं।

(ख) हनुमान :-

'राम की शक्ति-पूजा' में दूसरा प्रधान पात्र 'हनुमान' हैं, जो सदा राम-भक्ति में तत्पर रहते हैं।

यत्र-यत्र रघुनाथ कीर्तनम्, तत्र-तत्र कृतस्तकांजलिम्।

भाष्पवारि परिपूर्णलोचनम् मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्॥

महाशक्ति के रावण का पक्ष लेने पर हनुबान तुरन्त उस महाशक्ति को परास्त करने के लिए तैयार हो जाते हैं। साथ ही वे महाकाश को निगल जाने को सन्नद्ध होते हैं। राम के दु:ख का कारण पहचान कर उस दु:ख के कारण का निवारण करना चाहते हैं। महाशक्ति माता अंजना का रूप धारण कर हनुमान को आशा देती है। तो ; वे अपना प्रयास छोड देते हैं। फिर राम की आज्ञा मिलने पर वे देवीदह सरोवर से वे एक सौ आठ कमल पूजा के लिए लाते हैं।

(ग) विभीषण :-

'राम की शक्ति-पूजा' में तीसरा उल्लेखनीय पात्र है विभीषण। वह राम का सच्चा सखा है, सुन्दर मंत्रणा देता है और उचित अवसर पर राम को प्रेरणा प्रदान करता है। विभीषण राम को प्रचोदन करके 'युद्धस्व विगतज्वर:' गीता वचन के अनुसार युद्ध के लिए प्रेरित करता है। विभीषण का-चरित्र नीति-कुशल, रण-कुशल तथा प्रेरणा-प्रदायक सच्चे मित्र के रूप में प्रस्तुत हुआ है।

6. भावपक्ष तथा कलापक्ष :-

(क) भावपक्ष :-

'राम की शक्ति-पूजा' काव्य से रावण के अजेय बने रहने पर राम का ह्रदय अत्यन्त व्यग्र हो जाता है।

निराशा ग्लानि तथा हतोत्साह के कारण वे चिन्ता-मग्न होते हैं, निराश एवं हताश राम को अचानक उपवन में सीता के प्रथम-दर्शन की याद आजाती है –

विदेह की - प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन

नयनों का नयनों से गोपन-प्रिय सम्भाषण॥

× × × ×

ज्योतिः प्रताप स्वर्गीय-ज्ञातछवि प्रथम स्वीय ;

जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय ।

राम की यही स्मृति संचारी वीररस से परिपोषित होकर व्यक्त होती है –

सिहरा तन क्षणभर भूला मन लहरा समस्त,

हर धनुर्भंग को पुनर्वार ज्यों उठा टस्त,

फूटि स्मिति सीता-ध्यान-लीन राम के अधर;

फिर विश्व-विजय-भावना हृदय में आयी भर;

यह स्मृति (याद) संचारी भाव पुनः शोक एवं व्यग्रता से परिपूर्ण होकर और भी हृदयविदारक बन जाता है, फिर कवि वीरता,तेजस्विता, ओजस्विता एवं अदम्य उत्साह से परिपूर्ण रौद्र रस की मनोहर झाँकी अंकित करते हैं । हनुमान रौद्र रूप धारण कर महाकाश को निगल जाने के लिए उद्यत होते हैं –

इस ओर रूद्र-वंदन जो रघुनंदन कूजित।

करने को ग्रस्त समस्त व्योम कपि बढ़ा अटल॥

कवि निराला विभीषण के मुख से विषण्ण राम के प्रति उद्बोधनकारी वाक्यों का प्रयोग करते हैं –

रघुकुल गौरव, लघु हुए जा रहे तुम इस क्षण
तुम फेर रहे हो पीठ हो रहा जब जय रण ॥

इसी प्रकार जाम्बवान के उत्साह एवं उमंग भरे ओजस्वी शब्दों में वीर रस की व्यंजना उल्लेखनीय है–

रघुवीर ....

आराधना का दृढ आराधना से दो उत्तर
तुम करो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर ।

इस प्रकार राम की शक्ति पूजा लघु प्रबन्ध काव्यों में चिन्ता, स्मृति, शोक, विषाद, ग्लानि, उग्रता, आवेग, आदि विविध मनोभावों का मनोहर चित्रण हुआ है । वीररस इस काव्य का अंगीरस है ।

(ख) कलापक्ष :-

राम की शक्ति पूजा प्रबन्ध काव्य के रूप में लिखे जाने पर भी इसमें सम्पूर्ण राम कथा नहीं है । अब शास्त्रीय दृष्टि से इसे खण्ड काव्य कह सकते हैं । प्रबन्ध काव्य सर्ग बद्ध होना चाहिए । लेकिन यह काव्य एक ही सर्ग में अंकित हुआ है । काव्य के कथोपकथन मार्मिक हैं । सारे पात्र उत्तर की प्रतीक्षा न करके स्वत: अन्य पात्र को अपने कर्त्तव्य का ज्ञान बोध करा देते हैं ।

समासान्त पदावली का प्रयोग होने के कारण भाषा की दृष्टि से यह काव्य सर्वथा नूतन है । 'राम की शक्ति पूजा' की भाषा बाणकृत कादम्बरी का स्मरण कराती है और यह प्रयोग हिन्दी काव्य क्षेत्र में नूतन एवं अद्भुत है । भाषा अत्यन्त प्रौढ़, परिमार्जित तथा सुसंकृत है। भाषा में ओजगुण की प्रधानता के साथ गौडी रीति का खुल कर प्रयोग हुआ है ।

निराला जी ने सादृश्यमूलक एवं विरोधमूलक अलंकारों द्वारा भावों के अत्यन्त मर्मस्पर्शी चित्र अंकित किये हैं । उत्प्रेक्षा, व्यतिरेक, रूपक, मानवीकरण, उपमा, सन्देह आदि अलंकारों का काव्य में सुन्दर समावेश हुआ है । निम्न लिखित योजना व्यक्त होती है, कवि ने महिषासुर मर्दिनी, दुर्गा–पार्वती की कल्पना की है ।

गरजना चरण प्रान्त पर सिंह वह नहीं सिन्धु
दशदिक-समस्त हैं हस्त और देखो उत्पर,
अम्बर में हुए दिगम्बर उचित शशि-शेखर ।
लख महाभाव-मंगल पदतल धँस रहा गर्व
मानव के मन का असुर मन्द, हो रहा खर्व ॥

छन्द की दृष्टि से राम की शक्ति पूजा में कवि ने मात्राओं के गतिशील एवं स्वरायुक्त नवीन छन्द का प्रयोग किया है । जिसमें ओजपूर्ण भावों को चित्रित करने की अद्भुत क्षमता है ।

7. निष्कर्ष :

'राम की शक्ति पूजा' लघु प्रबन्ध काव्य है । इसमें उच्चकोटि का गाम्भीर्य, ओज एवं औदात्य विद्यमान हैं। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के अनुसार यह अलंकारिकता प्रधान उदार काव्य है । इस काव्य में कवि के जीवन की अनुभूति, निराशा, पराजय, संघर्ष और विजय कामना नाटकीय विधान में अंकित किये गये हैं । साहित्यिक गरिमा, चित्रण कौशल एवं अनुभूति की उत्कृष्टता के कारण राम की शक्ति पूजा लघुकाव्य में महाकाव्य का सा गम्भीर्य विद्यमान है। महाकाव्यों की शैली पर किया गया यह काव्य एक नवीन प्रयोग है।

* * * * *

Lesson Writer

- डॉ.शेख़ मौला आली

तारापथ

- सुमित्रानंदन पंत

नौका - विहार

4. 1

'नौका विहार' कविता का सारांश लिखकर विशेषताएँ

1. प्रस्तावना :

छायावादी कविता धारा में सुमित्रानंदन पन्त का विशिष्ट स्थान है। उनकी काव्य प्रेरणा पर प्रकृति और पूर्ववर्ती कवियों का प्रभाव निरीक्षण से प्राप्त हुई है। जिसका श्रेय उनकी जन्मभूमि कूर्मांचल को है । इनके अतिरिक्त माता का स्वर्गवास, असहयोग आन्दोलन और असफल प्रेम आदि भी पंत जी की काव्य प्रेरणा के भागी है ।

वीणा, ग्रन्थि, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, उत्तरा आदि पंतजी की काव्य-कृतियाँ हैं ।

नौका विहार कविता गुंजन की कविताओं में से है । यह पंत जी की उत्कृष्ट रचना मानी जाती है । कविता के वर्ण्य विषय को कवि ने प्रकृति की पोशाक पहना कर और अध्यात्मिकता का पुट देकर बहुत ही सरस तथा गम्भीर बना दिया है, कवि नाव में गंगा में विचरने लगते हैं ।

आकाश में शान्त, स्निग्ध तथा उज्ज्वल ज्योत्स्ना फैली हुई है । नक्षत्र ऐसा चमक रहे हैं मानो आकाश के अनन्त नेत्र पूर्ण शान्ति से मुक्त पृथ्वी को देख रहे हैं । सैकत शय्या (तालू की शय्या) पर ग्रीष्म-ऋतु की दुग्ध धवल,विरल तथा तन्वंगी गंगा गर्मी की नजर से थक कर, दु:खी हो और निश्चल रूप से लेटी हुई है । गंगा तापसबाला की तरह निर्मल है, चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब ऐसा दिखाई दे रहा है, मानो वह गंगा रूपी रमणी का सुन्दर मुख हो, चान्दनी की शोभा से गंगा की धारा रूपी हथेलियाँ चमक रही हैं, उसके हृदय पर लहरा रही हैं । उसके गोरे अंगों पर नक्षत्रों से चमकता हुआ आकाश रूपी सुन्दर और तरल नीला वस्त्र चंचल हो सिहर-सिहर कर लहरा रहा है । गंगा की लहरों पर चन्द्रमा की चाँदनी फैली हुई है वह लहरों के साथ ही घटती और बढ़ती रही है, मानो गंगा रूपी बाला की साडी की वह सिकुडन हैं ।

चाँदनी रात का प्रथम पहर था । कवि शील ही नाव लेकर चल पडे । चाँदनी में बालू चमकती सी लगती थी । जिस पर मोती के समान चाँदनी की शोभा निखरती थी । देखते-देखते ही नावों पर पालें चढ़ा दी गई और लंगर उठा दिया गया । पाल रूपी पंख को खोल कर वह हँसिनी सी सुन्दर नाव मनोहर गति से धीरे-धीरे पानी पर तिरने लगी । जल स्थिर था । जल रूपी निर्मल दर्पण में चाँदी के समान श्वेत किनारे प्रतिबिम्बित होकर थोडी देर के लिए दुगुने आकार में दिखाई देने लगें । कालाकाँकर का राजभवन जल में निश्चिन्त सोया सा लगता था, क्योंकि उसका प्रतिबिम्ब पानी में दिखाई देता था । वह राजभवन मान अपनी पलकों में अपने वैभव के गहरे स्वप्न संजोकर जल में निश्चिन्त और प्रसन्न सो रहा हो ।

जल प्रवाह में नाव की गति के कारण हिलारें उठती थीं जिनमें प्रतिबिम्बित आकाश ऐसा जान पडता था, मानो आकाश के ओर छोर हिल रहे हैं । नक्षत्रों का ज्यातिपुंज गंगा के जन में ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो तारों का समूह स्थिर होकर अपलक दृष्टि से जल के हृदय में प्रकाश फैलाए कुछ खोज रहा हो । नक्षत्रों के उन छोटे छोटे दीपकों को अपने चंचल अंचल की ओर में करके लहरें क्षण-क्षण लुकती छिपती फिर रही हैं । सामने ही शुक्र नक्षत्र की शोभा झिलमिल चमक रही है । वह शोभा ऐसा दिखाई देती है कि कोई में स्वयं को छिपा कर तैर रही हो । दशमी का चन्द्रमा अपने तिर्यक (टेढ़े) मुख को मुग्धा नायिका की तरह रुक-रुक कर लहरों के घूँघट में छिपा छिपा कर दिखा रहा है ।

चंचल लहरों के कारण चंचल बनी हुयी कवि पंत की नाव नदी की धारा के बीच पहुँच गई । रात का अधिक अन्तर होने के कारण और चाँदनी में चमकता हुआ गंगा का किनारा आँखों से ओझल हो गया था । इस स्थिति होने के कारण गंगा के दोनो ओर के किनारे दो बाहुओं की भाँति धारा के कृश तथा कोमल शरीर का आलिंगन करने के लिए अधीर से लग रहे थे । बहुत दूर क्षितिज पर खडा हुआ वृक्ष का मालाकार समूह भौंह की तरह टेढ़ा सा दिखाई देता था । नक्षत्रों से भरा आकाश ऐसा लग रहा था, मानो वह नक्षत्र रूपी अपने असंख्य नीलनेत्रों से निर्निमेष दृष्टि से विशाल भूमण्डल को देख रहा था । माँ के हृदय पर सोये शिशु की तरह धारा के बीच एक द्वीप सोया हुआ था। जिस से टकराकर गंगा का प्रवाह विपरीत दिशा में बहने लगा था। आकाश में उडनेवाला वह पक्षी कौन है ? क्या वह विरह-व्यथित कोक पक्षी है जो जल में अपने प्रतिबिम्ब को अपनी प्रेमिका कोकी समझकर अपने विरह-व्यथा से मुक्त होने के लिए उडकर उसके पास जाना चाहता है।

नाव का बोझ हलका होने से कविने पतवार घुमा दिया हैऔर धारा के विपरीत चलने लगी धारा में चलती हुई नाव ऐसी प्रतीत होती थी मानो डाँडों की चंचल हथेलियाँ फैला कर और उन में फोन रुची मोतियों को

भर कर वह उन्हें जल में बिखरा कर उनके तारों के हार बनाने लगी थी। तरल और तरल चाँदी के सर्पों जैसी चंचल किरणें रेखाओं की भाँति खिंच खिंच कर जल में चमकती हुई नाच रही थी । लहर रूपी लतिकाओं चन्द्रमा और नक्षत्रों के रूप में असंख्य फूल खिलकर फेनों से पूर्ण जल में विलीन हो रहे थे । अब नदी की धारा गहरी न रह गयी। अत: कवि आसानी से लकडी लग्गी से पानी की था (गहराई) लेते हुए उत्साह के साथ घाट की ओर नाव बढ़ चले।

नाव ज्यों-ज्यों किनारे पर लगती जगती थी, त्यों-त्यों हृदय में रात-रात विचार उत्पन्न होते जाते थे। मानव जीवन गंगा की धारा के समान है। जिस प्रकार नदी की धारा समुद्र में जा मिलती है उसी प्रकार जीव परमात्मा से जा मिलता है। जिस प्रकार आकाश का नील पन, चन्द्रमा की चाँदी-जैसी रजत हँसी तथा लघु लहरों का आनन्दमय विलास शाश्वत है उसी प्रकार जीवन का सुख-दुख तथा उल्लास संसार में सदैव विद्यमान रहते हैं। हे जग-जीवन के कर्णधारा जन्म-मरण के अस्पार जीवन का नौवन-विहार भी शाश्वत है। अर्थात जन्म के पश्चात् मृत्यु और मृत्यु के पश्चात है। अर्थात जन्म के पश्चात् मृत्यु और मृत्यु के पश्चात जन्म जीवन का अटल धर्म हैं।

कवि यहाँ कहते हैं- ''नौका-विहार के आनन्द में मैं अपना अस्तित्व-ज्ञान खो बैठा हूँ। किन्तु थट जीवन का चिरन्तन् प्रमाण। यह जीवन का वास्तविक रूप प्रस्तुत करता और मुझ को अमरत्न-प्रदान करता हैं।''

3. समीक्षा :-

गंगा का तापस बाला के रूप में अत्यन्त भाव व्यंजन चित्रण हुआ है। गंगा मनानवीकरण छायावादी प्रवृत्ति के अनुरूप है। चाँदनी रात का वर्णन यथार्थ एवं काव्यात्मक है। चाँदनी रात का वर्णन, यथार्थ एवं काव्यात्मक है। मृदु मन्द-मन्द मत्थर-मत्थर में नाव की गति का साकारचित्रण हुआ है। जल में आयु किरणों चाँद के सर्पों की रलमल बनाना अत्यन्त भावपूर्ण, सरल एवं सूक्ष्म कल्पना है। नौकाविहार की जीवन-धर्म के साथ धार्मिक सापेक्षता बतायी गयी है। अद्वैतवादी दर्शन की पुष्टि हुई है।

सांगरूपक, समुच्चय, छेकानुप्रास, उपमा, पुनरुक्ति, रूपक, उत्पेक्षा आदि अलंकार प्रयुक्त हुए हैं।

नौक-विहार कविता भावपक्ष तथा कलापक्ष की दृष्टि से सफल तथा उत्कृष्ट कविता है।

4. 2

'ताज' कविता में पल्लवित पंत जी की भावना

1. प्रस्तावना :-

'ताज' कविता सुमित्रानन्दन पन्त की प्रगतिवादी विचारधारा को लेकर-चलती है। ताज को आधार बनाकर पंतजी शोषकों की भर्त्सना करते हैं और कवि का आक्रोश व्यक्त होता है।

2. सारांश :-

पत्नी मुमताज की स्मृति में बादशाह शाहजहाँ न प्रेम के प्रतीक तथा कला अतुलनीयता में ताजमहल का निर्मण कराया उस पर पंतजी अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हैं -

जग (देश) में के जन निर्जीव तथा विषण्ण पडे हुए हैं। सारे प्राणी दरिद्रता के कारण कंकाल बने हुए हैं। शाहजहाँ ने संगमर्मर का भव्य महल 'ताज' बनाया है। मृत्यु का इस प्रकार अमर तथा अपार्थित (अलौकि) करना ठीक नहीं। ताज के निर्माण के द्वारा मृत्यु का सुन्दर शांगन (श्रृंगार) किया गया है। दूसरी और संसार में नग्ता, क्षुधातुर (भूखे), निराश्रित दरिद्र प्राणिहीन दीन तथा नैराश्य जीवन बिना रहे हैं।

हे मानव! जीवन के प्रति ऐसी उदासीनता उचित नहीं। ताज के निर्माण के द्वारा जीवित आत्मा का अपगान किया गया है तथा प्रेत एवं छाया (प्रेतात्मा) के प्रति प्रेम व्यक्त किया गया है। क्या प्रेम की अर्चना (पूजा) यही है कि हम मरण का वरण केरं? सजीव प्राणियों की उपेक्षा कर मृत प्राणियों की अर्चना करें? जीवित प्राणियों का शोषण कर, उनको कंकाल बनाकर क्या उन से जीवन का प्रांगन भरें न क्या जीवित प्राणियों को यातनाएँ देकर मार डाले? क्या यह शोभा-जनक है?

हमें जीवित मानव का आदर करना चाहिए, मृत व्यक्ति का नहीं। क्या हम शव को मानव का रूप रं, ''आदर आदि दे सकते हैं? और मानव को हम शव का कुत्सित (घृणित) चित्र बना दें? हे ताजमहल तुम तो अवश्य मनोहर हो। लेकिन तुम में युग-युग के मृत आदर्श भी निहित हैं। तुम में शावाराधना की रूढियाँ बैठ गयी हैं। जिनके हृदय में प्रेम का मोहान्ध होता है, वे तुम्हारी प्रशंसा करते हैं। तुम से प्रेरणा प्राप्त कर वे लोग अज्ञानकरा मृतकों को प्रेम करने की तथा जीवितों की उपेक्षा करते रहते हैं।''

हम जीवन का अमर तथा शाश्वत संदेश भूला चुके हैं। इसी कारण मृतकों के प्रति आस्था मन में उत्पन्न होती है। मृतकों को वही मानव प्रेम करेगा जो स्वयं मरा हुआ है, जिस में ज्ञान की दीप्ति नहीं है। जीवित व्यक्ति

की परमात्मा की सच्ची विभूति है। जीवित व्यक्ति की संक्षेम ध्यान में रखना सच्ची मानवता है और परमात्मा के प्रति अपनी आस्था प्रकट करना है।

3. समीक्षा :-

'ताज' कविता में कवि सुमित्रानन्दन पन्त की क्रनित विचारधारा प्रकट हुई है। सामाजिक शोषण प्रवृत्ति के प्रति कवि का अथाह विद्रोह स्पष्ट है। कवि सामाजिक शोषण की भर्त्सना करते हैं। मृतकों की आराधाना मृतक ही करते हैं और जीवितों की रक्षा ईश्वर करता है।

'ताज' पंत जी की प्रगतिवादी विचारधारा की कविता है।

4. 3

'भारतमाता' कविता में अभिव्यक्त सुमित्रानन्दन पंत जी की देश-भक्ति (देश-प्रेम) का विवरण

1. प्रस्तावना :-

'भारतमाता' कविता की रचना सन् 1940 ई. में हुई है। कविवर पंत ने इस कविता में अपनी देशभक्ति की अभिव्यक्ति की है। भारत की प्राकृतिक छटा अनुपम तथा अपार है। किन्तु दुर्भाग्यवश भारत दीनता एवं दरिध्रता का निलय भी बना हुआ है।

2. कविता का सारांश :-

भारतमाता ग्रामवासिनी है। धूल भरा मैला-सा अंचल खेतों में फेला हुआ है। फसलों से सरे हुए खेत लह-लहाते रहते हैं। गंगा और यमुना नदियों में भारतमाता का आँसू-जल प्रवाहित होता रहता है। यह मिट्‌टी की प्रतिमा है। और सुख-दु:ख आदि विरोधी भावों से सदा उदासीन रहती है। भारतमाता दीनता के कारण जडीभूत हो रहती है। भारतमाता दीनता के कारण जडीभूत हो गयी है। दया दृष्टि की आशा से दूसरों की ओर नत (सिर झुकाकर) एकटक देखती रहती है। उसके ओटों पर चिर नीश्व (निश्शब्द) रोदन व्यक्त होता रकहता है। युग-युग के अन्धकार-रूपी अज्ञान से माता का विषण्ण (दु:खी) हुआ है। सारी सुण्व-सुविधाओं से वह वंचित है। भारतमाता अपने ही घर (देश) में प्रवासिनी भारतमाता की तीस कोटि (तीस करोड) 1940 में भारत के। जनता तीस करोड थी।) सन्तान नग्न तन से है। भारत के लोग अध-भूखे, शोषित, साधनहीन, मूर्ख, असभ्य, अशिक्षित एवं निर्धन हैं। भारतमाता निरादर के कारण नत-मस्तक हो तरूतण निवासिनी बन गयी है। भारतमाता शरदेन्दु-हासिनी। शरदकालीन स्वच्छ चन्द्रमा की भाँति निर्मल हँसीवाली है। भारत की सुनहली

फसल (स्वर्ण शस्य) दूसरों के चरणों से लुण्ठित (टूटी हुई) है। भारतमाता का मन धरती के समान सहनशील है। निरन्तर अत्याचारों के कारण उसका मन सदा कुण्ठित (दु:खी) है। दु:खाधिक्य के कारण वह क्रन्दन करती है और कम्पित भी होती है। भारतमाता के अधरों की मुस्कान मौन हो गयी है। शारद-कालीन स्वच्छ तथा निर्मल चन्द्रमा जैसी हँसी विदेशी शासक-रूपी शहुने ग्रस लिया है।

भारतमाता का भृकुटि-रूपि क्षितिज तिमिरांकित हुआ है। अंधकार-रूपी दु:ख ने ग्रस लिया है। दु:ख के कारण भारतमाता के नयन नमित (झुके हुए) हैं। उसका हृदय रूपी आकाश निराशारूपी वाष्प (भाप) से ढ़का हुआ है। दु:ख के कारण उसके मुख की शोभा नष्ट होकर कालिमा से पुत गयी है। भारतमाता का तप और संयम सफल हुआ हैं।

अमृत समान अहिंसा का स्तन्य (दूध) वह संसार को पिला रही है। जनता के मन का भय और सांसारिक अज्ञान और भ्रम का हरण वेट कर रही है। भारतमाता जग-जनती है और स्रे लोगों के जीवन विकसिनी है।

3. **समीक्षा :-**

श्यामल अच्छी फसलों का गुण है। यहा भारतमाता की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण हुआ है। तरु तत निवासिनी - भारत के अनेक लोग पेडों के नीचे निवास कर रहे हैं। विदेशी शासकों के अत्याचारों के कारण भारतवासी दबे हुए थे। पंतजी कविता का समापन गाँधीवाद से करते हैं।

उपमा, रूपक तथा रूपकातिशयोक्ति अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

पाठ : द्रुत झरो

4. 4

सुमित्रानन्दन पन्त कृत 'द्रुत झरो' कविता की समीक्षा

द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र कविता 'युगांत' में से है। ये कविता पंतजी की परिवर्तित विचारधारा का प्रतिनिधित्व करती है। कवि पुरानी परम्पराओं को त्याग कर नवीन चेतना को आमन्त्रण देते हैं।

सारांश :- कवि कहते हैं -

''हे जगत के जीर्ण, त्रस्त, ध्वस्त और शष्क (सूखे) जीर्ण पत्र। तुम शीघ्र ही झर जाओ, ताकि तुम्हारे स्थान पर नये और कोमल पत्ते उमर आयें। तुम शीत और ताप (गर्मी) का प्रभाव न सह सकने के कारण पीलें पड गये हो। तुम वसन्त ऋतु की वायु से डरते हो, क्यों कि वह जीर्ण पत्रों को झाडकर उनके स्थान पर नये पत्तें को जन्म देती है। किसी से भी तुम्हारा रागात्मक सम्बन्ध नहीं। इसी कारण तुम जड और पुराचीन (बहुत पुराने) पड गये हो।''

भूतकाल निर्जीव तथा मृत (मरे हुए) विहंग (पक्षी) के समान है। वे अब तक इस संसार में अपना घोंसला बनाये हुए हैं। किन्तु उन में बोलने की शक्ति नहीं। दुर्बलता के कारण वे श्वासहीन बन गये हैं। अत: उन घोंसलों (शीरीरों) को छोड देना ठीक है। प्राचीन परंपरा (Tradition) रूपी मृत पक्षी के पंखटूट कर अस्त-व्यस्त हो गये है। इसलिए झर-झर कर अनन्त में विलीन हो जाना ही विश्व के लिए कल्याणप्रद है। सामाजिक विकास के लिए प्राचीन परंपरागत विषयों को त्याग कर नये जीवन-विधान को अपनाना चाहिए।

जिस प्रकार पुराने पत्तों के झंड जाने पर उनके स्थान पर लाल-लाल नव अंकुर उमर आते हैं, उसी प्रकार प्राचीन रूढ़ियों (Conservatism) के समाप्त होने पर विश्व के शरीर जो कंकाल-जाल (जो कंकालों का समूहरह गया है, पुन: नवल (नया) रूधिर (रक्त) प्रवाहित होगा। जीवन की मांसल (स्वस्थ) हरियाली में आनन्दमय मर्मर मुखरित होगा।

नवीन परम्परा इस संसार को पुन: नवीन मनोहर प्रेरणा देगी। फूले-फूले और नव-जीवन-पूर्ण विश्व के यौवन (वसंत) में जागृत हो कर संसार-रूपी मनवाली कोयल (पिक) आनन्दोत्साह से कूल उठेगी। निज (अपने) उमर प्रणय के स्वर की मदिरा से नवयुग को पुन: भर जायेगी। सारा संसार सुख-संपन्नता से सर्वत्र आनन्दोत्सनव मचायेगा।

3. समीक्षा :-

पंतजी यहाँ प्राचीन रूढ़ियों के स्थान पर नवीन भावनाओं वग समावश चाहते हैं। भूतकाल विगत तथा निस्सार बताया गया है। कवि प्राचीन रूढ़ियों तथा परम्पराओं के विरुद्ध व्यापक विद्रोह करते हैं। प्राचीन परंपराओं को जीर्ण पत्र तथा मृत विहंग कहते हैं।

प्राकृतिक-विकास मानव-चेतना के विकास के प्रतीक माना गया है।

छेकानुप्रास, समासोक्ति, यमक, रूपक आदि अलंकार प्रयुक्त हुए हैं।

इस कविता में पंत जी की 'प्रगतिवादी' विचारधारा प्रकार होती है।

4. 5

पंत के 'प्रकृति-चित्रण'

1. **प्रस्तावना :-** प्रकृति से कवि का सम्बन्ध।

श्री सुमित्रानन्दन पन्त प्रकृति के सुकुमार कवि हैं। प्रकृति के आलम्बन में आबद्ध होकर नारी के रूप-वैभव को भी उन्होंने ठुकरा दिया था। विश्व के अनेक कवियों ने प्रकृति का चित्रण अपने-अपने काव्यों में किया है। किन्तु प्रकृति के प्रति जैसा गहरा अनुराग में किया है। किन्तु प्रकृति के प्रति जैसा गहरा अनुराग महाकवि पंत का परिलक्षित हुआ है, वैसा किसी अन्य कवि में दुग्गोचर नहीं होता। प्रकृति उनके लिए काव्य की वस्तु और उनकी साज-सज्जा का साधन ही नहीं, अपितु, उनकी काव्य-प्रेरणा का स्रोत भी रही है। इस सम्बन्ध में पंतजी का स्वयं कथन है - कविता करने की प्रेरणा मुझे सब से पहले प्रकृति निरीक्षण से मिली। जिसका श्रेय मेरी जन्म-भूमि कूर्मांचल प्रदेश को है। कवि-जीवन से पहले भी, मुझे याद है, मैं घण्टों एकान्त में बैग, प्राकृतिक दृश्यों को एकटक देखा करता था और कोई अज्ञात आकर्षण मेरे भीतर एक अव्यक्त सौन्दर्य का जल बुनकर मेरी चेतना को तन्मय कर देता था। जब कभी मैं आँखें मूंद कर लेटता था, तो वह दृश्यपट मेरी आँखों के सामने घमा करता था और वह शायद पर्वत-प्रान्त के वातावरण ही का प्रभाव है थि मेरे भीतर विश्व और जीवन के प्रति एक गम्भीर आश्चर्य की भावना, पर्वत की तरह निश्चय रूप में उपस्थित है।

2. **प्रकृति चित्रण के विविध रूप :-**

कवि पन्तजी प्रकृति की रमणीय एवं सुकुमार रूप-धनि पर विमुग्ध रह हैं। उनकी कल्पना का श्रृंगार प्रकृति ने किया है, उनके काव्य उपकरणों को प्रकृति ने राजा या है युनकी मनोरम भाव-मूर्तियों के लिए सौन्दर्य सामग्री का संकलन प्रकृति ने ही किया है और उनको काव्य की प्रेरणा प्रकृति ने ही दी है।

आधुनिक युग में प्रकृति चित्रण की विविध प्रणालियाँ प्रचलित हैं। वर्तमान का कवि प्रकृति को काव्य का मूलाधार मानता है और प्रकृति के माध्यम से ही अपनी कमनीय कल्पना अभिव्यक्त करता है। आधुनिक

काव्यों में प्रकृति-चित्रण दस रूपों में हुआ। (1) आलम्बन रूप में (2) उद्दीपन रूप में (3) संबोधनात्मक रूप में, (4) वातावरण-निर्माण के रूप में, (5) रहस्यात्मक रूप में, (6) प्रतीकात्मक रूप में, (7) अलंकार-योजना के रूप में (8) मानवीकरण के रूप में, (9) लोक-शिक्षा मेन और (10) दूती का रूप में।

1. आलम्बन रूप में :-

प्रकृति का आलम्बन रूप चित्रण दो प्रकार से किया जाता है - (1) प्रकृति संश्लिष्ट एवं अत्यन्त भव्य चित्र भक्ति करना। इस में प्रकृति अलौकिक रमणीयता के साथ अपने पूर्ण एवं समग्र रूप में अंकित की जाती है। (2) प्रकृति का स्वतन्त्र एवं आलम्बन रूप में चित्रण। इस में केवल प्राकृतिक पदार्थों के नाम गिना दिये जाने हैं। उन नामों की गणना द्वारा अर्थ-ग्रहण मात्र कर दिया जाता है। पन्तजी के काव्यों में उक्त दोनों प्रणालियों का प्रयोग हुआ है। 'बादल', 'आँसू', 'वसन्त श्री', 'गुंजन', नौकाविहार आदि कविताओं में उनके संश्ष्टि-चित्रों की भरमार द्रष्टव्य है। उदाहरण के लिए 'आँसू' कविता में अंकित कवि का संश्लिष्ट चित्र देखिए -

बादलों के छायामय-मेल, घूमते हैं आँखों में फैल।
अंबर और अंबर के खेल, शैल में जलद में शैल।
'ग्रामश्री' कविता में कवि विविध फलों के नाम गिनते हैं -
महँके कटहल, मुकुलित जामुल, जंगल में झरबेरी झूली
फूले झाड़ू, नींबू, दाडिन, आलू, गोभी, बैंगन मूली।

2. उद्दीपन रूप में :-

मानवीय भावनाओं को जहाँ प्रकृति उद्दीपन करती है, वहाँ कवि का प्रकृति चित्रण 'उद्दीपन' के रूप में कहलाता है। पंतजी की निम्नांकित पंक्तियों में विरह-वेदना का उद्दीपन उषा की आशा, सन्ध्या की उदासी, की आधारित और सौरभ-समीर की गण्डी सांसों से सिखाया गया है -

कब से विलोकित तुम को, उषा के वातायन से।
संध्या उदास किरजाती, सूने गृह के आंगन से॥
लहरें अधीर सरसी में, तुम को तकती उठ-उठ कर।
सौरभ समीर रह जाता प्रेयसि! ठंडी साँस भर कर॥

वियोग की भाँति मिलन की मधुर वेला में भी कवि को प्रकृति के कण-कण में अपनी भावनाओं का

प्रतिबिम्ब दृष्टिगोचर होता है। प्रथम समागम की वेला में नववधू की मूकता और लज्जा के भार से उसे सारी प्रकृति मौनसी, झुकी हुई -सी प्रतीत होती है।

आज छाया चहुँ दिशि चुपचाप, मृदुल मुकुलों का मौनालाप।
रूपहली कलियों से कुछ लाल, लद गई पुलकित पीयल डाल॥ और
वह पिक की कर्म-पुकार, प्रिये झर-झर पड़ती साभार।
लाज से गडी न जाओ प्राण, मुस्कार दी क्या आज विहान।

3. संवेदनात्मक रूप में :-

प्रकृति के संवेदनात्मक रूप का चित्रण काव्यों में दो रूपों में प्राप्त होता है। प्रकृति जहाँ मानव के हास, उल्लास, आनन्द एवं मनोरंजन के समय उनभावनाओं को प्रकट करती हुई अंकित की जाती है, वहाँ मानव के शोक, विषाद, रूदन एवं अवसाद के क्षणों में स्वयं अश्रुधारा को साथ चित्रित की जाती है। दोनों जगह प्रकृति का संवेदनात्मक रूप प्रकट होता है। 'मिलन' कविता में हास, उल्लास एवं आनन्द के क्षणों में प्रकृति को भी आनन्द-उल्लास में निमग्न करके कवि की कलम चलती है -

जब मिलने मौन नयन मल भर, खिलखिल अपलक कलियाँ निर्भर, देखती मुग्ध, विस्मित, नभ पर, तुम मदिराधर पर मधुर अधर -

पंत जी ने प्रकृति को शोक, विषाद एवं रुदन के क्षणों में अत्यधिक विषाद एवं खिन्नता के साथ अश्रुपात करते हुए अंकित किया है। उन्होंने परिवर्तन 'कविता' में संसार की अचरिता देख कर पवन को नि:श्वास भरते हुए दिखाया है, समुद्र को को सिसकियाँ भरते और नक्षत्रों को सिहरते हुए बताया है।

अचरिता देख जगती की आप, शून्य भरता समीर निःश्वास,
डालता पातों पर चुपचाप, ओस को आँसू नीलाकाश,
सिसक उग्ता समुद्र का तन, सिहर उठते उडुगन।

4. वातावरण निर्माण के रूप में :-

इस रूप में प्रकृति-चित्रण दो प्रकार से किया जाता है। (1) गम्भीर वातावरण तथा (2) उल्लापूर्ण वातावरण। कवि ने सन्ध्या के बाद कविता में अत्यन्त गम्भीर वातावरण का वर्णन किया है -

बिरहा गाते गाडी वारे, भूँक भूँक कर लडने कूकर, हुआ हुआ करते सियार देते विषण्ण निशि बेला कोस्वर।

मधुर-मिलन के आनन्दपूर्ण श्रणों का वातावरण निर्माण करने के लिए, प्रकृति-चित्रण की प्रणाली भी कवि के रची है। 'ग्रन्थि' कविता में नाव डूबने पर अचानक प्रिया से मिलन होने की आनन्दपूर्ण घटना का वर्णन वसन्त की मादक बेला के वर्णन के साथ हुआ है -

जानकर ऋतुराज का नव आगमन,

अखि कोमल कामनाओं अवनि की

खिल उठी थीं मृदुल सुमनों में कई

सफल होने की अवनि में ईश से।

5. रहस्यात्मक रूप में :-

आधुनिक कवियों ने प्रकृति को एक अगोचर एवं अव्यक्त सत्ता के रूप में भी देखा है। वह रहस्यावादी सत्ता कौन है और क्या है? पंतजी ने इसी रहस्यमयी सत्ता की ओर संकेत करेते हुए 'मौन-निमन्त्रण' नामक कविता में प्रकृति के रहस्यात्मक रूप की अत्यन्त मनोहर झाँकी अंकित की है - देख वसुधा का यौवन भार गुँज उठता। है जब मधुमास विधुर-उर के से मृदु उद्‌गार कुसुम जब खुल उठते सोच्छवास नजाने, सौरभ के मिस कौन - सन्देश मुझे भेजता मौन।

6. प्रतीकात्मक रूप में :- आधुनिक काल में कवियों ने

प्रकृति का सर्वाधिक प्रयोग प्रतीकों के रूप में किया है। प्रकृति के उपकरण विविध भावों, रूपों एवं क्रियाओं के प्रतीक बनकर आधुनिक कविताओं में चित्रित हुए हैं। कवि पन्त ने भी प्रकृति का प्रतीकों के रूप में पर्याप्त प्रयोग किया है -

सुनता हूँ उस निस्ताल जल में रहती मछली मोती वाली।
पर मुझे डूबने का भय है, भाती तटकी चल-डल माली॥

यहाँ 'मोतीवाली मछली' ब्रह्म का प्रतीक है और 'निस्तल-जल' परमार्थ या जीवन की तह का प्रतीक है। इन प्रतीकों द्वारा कवि बतलाना चाहता है कि इस जीवन की तह में जो परमार्त तत्व छिपा है, उसे पकडने

और उस में लीन होने के लिए बहुत से लोग अन्तर्मुख होकर गहरी डुबकियाँ लगाते हैं, पर कवि पंत को तो उसका अव्यक्त रूप ही रूचिकर है।

7. अलंकार योजना के रूप में :-

हमारे प्राचनी आचार्यों द्वारा परिणति प्रायः सभी अलंकारों के रूप में प्रकृति का प्रयोग किया जाता है। पंत की कविता में मधुबाला कीसी गुंजार, वारि बिम्ब सा विकल हृदय, इन्द्रचाप-सा बचपन, 'विहग' बालिका का सा मृदु स्वर आदि-आदि सुन्दर उपमाओं का चित्रण मिलता है। पंतजी की 'भावी पत्नी' की साज-सज्जा प्रकृति के ही अंगों के द्वारा हुई है -

अरुण आधरों की पल्लव प्रात, मोतियों सा हिलत। हिम-हास। इन धनुषी पट से ढंक गात, बाल-विद्युत का पावस-लास॥

यहाँ 'पल्लव', 'इन्द्र-धनुष', 'बाल-विद्युत', 'पावस' आदि का प्रयोग अत्यन्त सुन्द रूपों में हुआ है।

इसी प्रकार रूपक अलंकार का प्रयोग देकिए -

नवल मेरे जीवन की डाल।
बन गई प्रेमविहग का वास॥

इसी तरह कवि पन्त ने सुन्दर संगारूपक अलंकार की सृष्टि करते हुए प्रकृति के उपकरणों का बडा ही सजीव एवं सुन्दर प्रयोग किया है -

अहे वासुकि सहस्र-फन !

लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिह्न निरन्तर,

छोड रहे हैं जग के विक्षत वक्ष-स्थल पर।

इस प्रकार पंतजी ने प्रकृति चित्रण विविध अलंकारों के रूप में किया है

8. मानवीकरण के रूप में :-

प्रकृति का मानवीकरण तो छायावादी कवियों की प्रमुख प्रवृत्तियों में एक हैं। पन्तजी ने भी प्रकृति के विविध उपकरणों पर मानवीय चेष्टाओं और भावनाओं का सुन्दर एवं सजीव आवरण चढ़ाया है। उदाहरण के लिए कवि ने 'छाया', 'बादल' , 'मधुकरी', 'संध्या', 'सन्ध्यातारा', 'नौका-विहार' आदि कविताओं में

प्रकृति को मानवीय भावों भावनाओं, चेष्टाओं, व्यापारों आदि से ओतप्रोत करके पूर्णतया सचेतन प्राणियों के रूप में अंकित किया है।

उदाहरण के लिए सन्ध्या का मनोहर रूप देखिए –

कौन तुम रूपसि कौन? व्योम से उतर रही चुप-चाप छिपी निज छाया छवि में आपु सनहला फैला केश कलाप – मधुर, मंथर, मृदु, मौन!

पंत जी ने गंगा नदी को मानवीय भाव, आकार प्रकार वेषभूषा, साज-सज्जा आदिसे सुसज्जित करके एक तापस-बाला के रूप में अत्यन्त सजीवता तथा सचेन्त के साथ अंकित किया है –

सैकत शय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म विरल,
लेटी है, श्रान्त, कलान्त, निश्चल।
तापस बाला गंगा निर्मल, शशि-मुख से दीजिए।
लहरे उर पर कोमल कुन्तल।

9. लोक-शिक्षा के रूप में :-

प्राचीन काल से ही प्राय: कविगण मानवों प्रकृति के द्वारा शिक्षा देने आये हैं। प्रकृति प्रेमी पंतजी ने भी अपनी कविताओं में प्रकृति के विविद परिवर्तनों द्वारा शिक्षा या उपदेश देने का कार्य किया है। 'पतझर' कविता में पुरो पत्तों के निरन्तर झडने तथा नूतन किसलयों के आगमन की बात कह कर, संसार के चिर आवागमन का सुन्दर उपदेश दिया है –

झरो, झरो, झरो !

जंगम जग प्रांगण में, जीवन अंघर्षण में

नव युग परिवर्तन में, मन के पीले पत्ते!

झरो, झरो, झरो!

10. दूती के रूप में :-

विविध कवियों ने प्रकृति को दूत या दूती के रूप में अंकित करके बडी सजीव कल्पनाएं की हैं। पंत भी प्रकृति को दूती के रूप में अपनी विचारधारा से सहमत हैं। अपनी बादल कविता में पंत ने स्पष्ट कर दिया

सुरपात के हम ही है अनुचर, जगत्प्राण के भी सहचर, मेघदूत की सजल कल्पना, चातक के चिर जीवन घर।

बादल दमयन्ती के समान कुमुद कला को सन्देश देने के लिए स्वयं स्वर्ण हंस का-सा रूप धारण करते है और प्रिय का ललाम सन्देश देकर पूर्णतया दूत व्यर्थ करते हुए भी दिखाए गये हैं।

दमयन्ती सी कुमुद-कला के रजत करों में फिर अभिराम, स्वर्ण हँस-से तुम मृदु ध्वनि कर कहते प्रिय सन्देश ललाम।

3. उपसंहार :-

कविवर पन्त प्रकृति के सच्चे उपासक रहे हैं। उनके हृदय में अपनी बाल-सहचरी के साथ सहज मेमत्व रहा है। उन्होंने प्रकृति वन प्रयोग अनेक रूपों और अनेक शैलियों में किया है। उनके काव्य में कहीं प्रकृति काव्य के मूलाधार रूप में विराजमान है, को कहीं वह उनके साधन रूप में प्रयुक्त है। पंत के लिए प्रकृति प्रेयसी है, उनकी प्रेयसी के रूप-वैभव को सजानेवाली है और उस प्रयेसी साज-सज्जा भी वह स्वयं है। प्रकृति पंतजी हास-रुदन की प्रेरक है, उद्दीपक है और उसकी अभिव्यक्ति का माध्यम है। उन्हें चाहे उपदेश देना हो, या किसी दार्शनिक विचारधारा की पुष्टि करनी हो या किसी अपरिचिता से मौनालाप करना हो, प्रकृति उनकी सर्वत्र सहायिका के रूप में उपस्थित होती है।

प्रकृति ही कवि पंत की वाणी है, भाषा है, अलंकृति है, भावना है और विचारधारा है, उन्होंने विचारों की समस्त विधि, भावनाओं का समस्त आह्लाद, सौन्दर्य का समस्त वैभव और गीतों का समस्त माधुर्य प्रकृति से ही प्राप्त किया है। इसका प्रमाण निम्न लिखित पंक्तियाँ हैं -

सिखा दो ना हे मधुप कुमारि, मुझे भी अपने-अपने मीठे गान।
कुसुम के चुने कटोरों से करा दो ना कुछ-कुछ मधु-पान॥

Lesson Writer

- डॉ.शेख मौला अली

* * * * *

संधिनी

- महादेवी वर्मा

5. 1 धीरे-धीरे उत्तर क्षितिज से

1. प्रस्तावना :-

हिन्दी छायावादी काव्य जगत में महादेवी वर्मा का विशिष्ट तथा प्रत्येक स्थान है। सन् 1907 में उत्तरप्रदेश के फरसाबाद में एक सुसंपन्न एवं सांस्कृतिक परिवार में आप का जन्म हुआ। आपकी प्राथमिक शिक्षा इन्दौर में हुई। प्रयाग विश्वविद्यालय से आपने बी.ए और पश्चात एम.ए किया। उसी समय आप प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या नियुक्त हुई। फिर उसी संस्था के कुलपति पद पर आभूषित हुई।

2. साहित्यिक जीवन :-

बारह साल की अवस्था में ही महादेवी ने काव्य-सृजन प्रारम्भ किया। माँ से सुनी कहानियों के आधार पर बचपन में ही आप गीत रचना करती थीं। विद्यार्थी-जीवन में आपने राष्ट्रीय जागरण के गीत रचे। मानव जीवन की प्रधान घटनाओं के प्रतीक में महादेवी ने 'नीहार' 'रश्मि', 'नीरजा', 'संध्यागीत', 'दीपशिखा' काव्यों की रचना की। 'अतीत के चलचित्र' 'स्मृति की रेखाएँ', 'श्रृंखला की कडियाँ' आदि आप की अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं।

महादेवी का काव्य वेदनामय है। लेकिन वह वेदना लौकिक जगत से भिन्न अलौकिक है। इसी कारण आप में अनुभूति की तीव्रता है। 'नीर भरी दु:ख की बदली', 'आधुनिक मीरा' इत्यादि उपाधियों से साहित्य प्रेमी महादेवी का समादर करते हैं। आप कुशल चित्रकारिणी भी हैं।

1934 में 'सेक्सरिया' पुरस्कार और 'मंगलप्रसाद' पुरस्कार, 1956 में 'पद्मभूषण' औक 1982 में ज्ञानपीठ पुरस्कार महादेवी को प्राप्त हुए। इनके अलाता अपने जीवन भर अनेक उपाधियाँ तथा सम्मान प्राप्त किये।

(महादेवी के सम्बन्ध में कहीं भी हो, यही परिचय दें।)

3. धीरे-धीरे उतर क्षितिज से : सारांश

महादेवी वर्मा वसन्त-रजनी का स्वागत करती है। प्रकृति को एक लावण्यमयी मनोहर सुन्दर मानकर महादेवीजी उसके बडे सजीव एवं मार्मिक सौन्दर्य-चित्र अंकित करती हैं। कवयत्री वसंत-रजनी के आह्वान में कहती हैं -

हे वसन्त-रजनी क्षितिज (आकाश)से धीरे-धीरे उत्तर आ। नक्षत्रों का नववेणी बन्धन बन ले, नव शशि (चन्द्रमा) को शीश (सिर) पर फूल जैसा। अलंकृत कर ले और क्रांतिवलय को निर्मल तथा महान अवगुंठन (ముసుగు) बनाकर धीरे-धीरे क्षितीज से उतर कर आ।

हे वसन्त-रजनी तू अपनी चितवन (कटाक्ष) से सुन्दर मोती विछा दे। हे वसन्त-रजनी तू पुलकती हुई आ। पत्तों के मर्मर (पत्तों के एक-दूसरे से लगने से उत्पन्न होनेवाले शब्द) में तेरे नूपरों की सुमधुर ध्वनि है, पुष्पों पर विहरनेवाले भ्रमरों के गुंजार में तेरे कंकण मनोहर तथा बयान्वित ध्वनि सुनाई देती है और तेरा चलन मन्द अलभ तथा लययुक्त होता है। हे रजनी तू अपनी मुस्कान से निर्मल चाँदनी की। धार बदा दे। हे वसन्त-रजनी तू हँसती आ।

हे वसन्त-रजनी स्वप्नों में आनन्द के करण शोभवली पुलकती है, अंजलि में स्मृतियाँ भर ले, मलयानिल (मताय-गरूत) रूपी। तिशील रेशनी वस्त्र पहन कर, स्पर्स वर्ण की छाया से विश्व में व्याप्त हो, और अभिसार बन हुई आ।

वसन्त में स्वच्छ तथा मधुर सरिता का जलपूर्ण हृदय-सिहर कर उठता है। मधु से भरे हुए पुष्प खिल-खिल कर अपने मनोहर सौन्दर्य तथा सुग्ध से प्रकृति की शोभा बढ़ाते हैं। ये क्षण बार-बार आते रहते हैं।

हे वसन्त-रजनी। प्रिय के आगमन पर चरणों की आदर पर मुग्ध हो यह धरती पुलकित होती है। तू सिहर-सिहर कर आ। तेरा यह आह्वान गीत है और तेरा घन-स्वागत है।

4. समीक्षा :-

महादेवी जी ने इस कविता के शीश-फूल कर, शशि का नूतन रश्मि शब्दों का प्रयोग कलंक रहित चन्द्रमा के उद्देश्य से किया है। वसन्त का आगमन चन्द्रदर्शन के प्रथम चरण में ही होता है। वैसे दर्शित चन्द्रमा स्वच्छ होता है। अशोकवाटिका में शोकमग्न बैठी सीता के वर्णन में वाल्मीकि ने 'चन्द्ररेखा मिवालाम कहा है।'

'सुन प्रिय की पद-चाप हो गयी पुलकित यह अवनी' पंक्ति में 'प्रिय की पद-चाप' - परमात्मा के चरणों

की ध्वनि सुन कर धरती पुलकति होती है। महादेवी जी ऋतु वसंन्त को परमात्मा का प्रतीक मानती हैं। यहाँ कवयत्री गीता की 'मासानां मार्गशीर्षोस्मि ऋतुनां कुसुमा; कर:' भावना व्यक्त करती है जिसका अर्थ है ''महीनों को मार्गशीर्ष और ऋतुओं में वसन्त परमात्मा के रूप हैं।''

इस कविता में प्रकृति की रमणीयता का वर्णन हुआ है। प्रकृति में मानवीकरण रूप का चित्रण हुआ है।

'धीरे-धीरे उत्तर क्षितिज से' छायावादी की उदीयमान कविता है। यह छायावाद की एक गीत रचना है।

Lesson Writer

- डॉ. शेख़ मौला अली

5. 2

'विरह का जलजात जीवन

कविता का सारांश :

महादेवी जी अपने सम्पूर्ण जीवन को विरह का कमल (जलजात) मानती हैं। महादेवी जी कहती हैं -

''वेदना में मेरा जन्म हुआ है। मुझे करुणा में निवास मिला है। मेरे आँसुओं को दिन चुनता है और रात उन आँसुओं को गिनती है। मेरा जीवन विरह का कमल हैं।

मेरा ह्रदय आँसुओं का भण्डार है और मेरे नेत्र भासुओं का टंकसाल है। मेरा क्षणिक कोमल शरीर बादलो की भांति अश्रुजल के कणों से ही बना है। मेरा जीवन विरह वन कमल है।

मधुमास अश्रु के मधुकण लुटाता आता है। करुण बरसात आँसुओं की ही हाट बन कर आती है। काल ने मुझे हर क्षण अश्रु-धारा ही दी है। आँसुओं की धारा हर पल बह रही है। मेरे निश्वासों के द्वारा पवन मेरी करुणा कथा पूछता है। मेरा जीवन विरह का कमल है।

हे लीलाकमल (भगवान्)। मेरे यह जीवन रूपी विरह का कमल तुम्हारा होना चाहता है। आज ही हो सके तो महान भाग्य है। तुम्हारे स्मित मुसकानते रूपी प्राप्त (प्रात:काल) के दर्शन से मेरा विरह रुपी कमल खिल उठे, यही मेरे लिए महान भाग्य की घात है।

मेरा जीवन विरह वन कमल है।''

समीक्षा :-

'विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात' गीत रचना में महादेवी जी की 'भावना मूलक रहस्यानुभूति' व्यक्त होती है। कवयत्री उस चेतना सत्ता परमात्मा को अनन्य सौन्दर्यशाली प्रियतम के रूप में मान कर अपने सर्वस्व का परित्यग करती हुई उसके साथ लौकिक रति जैसी अलौकिक दाम्पत्य रति में लीन रहना और उस परमात्मा के साथ एकाकार होना चाहती है। इस में भावुकता प्रणय भावान, प्रेमजन्य आत्मानुभूति और चिरन्तन प्रणय भावना के विरह की व्याकुलता दर्शित होती है।

'विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात।' कहकर महादेवी जीने अपने सम्पूर्ण जीवन को ही विरह का कमल कहा है, जिसका जन्म को ही विरह का कमल कहा है, जिसका जन्म वेदना मुँह में हुआ है, करुणा में जिसकाघर है,जिसके आँसुओं को दिन चुनता रहता है और रात जिसके आँसुओं को गिनती रहती है और नेत्र आँसुओं की टकसाल है और जिसका क्षणिक कोमल शरीर बादलों की भाँति अश्रुजल के कणों से ही बना है आदि-आदि में करुणा की प्रधानता अभिव्यक्त हुई हैं। कवयत्री की आत्माभिव्यंजना व्यक्त हुई है।

यहाँ कवयत्री महादेवी जी सालोक्य, सामीप्य, सायुज्य तथा सारुप्य दशाओं में विचरती हैं जो योगमार्ग है।

'महादेवी जी की' नीरभरी दुख की बदली की भावना यहाँ साकार दर्शित हुई है।

Lesson Writer

- डॉ. शेख मौला अली

5. 3

महादेवी वर्मा कृत 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल'

कविता का सारांश :-

महादेवी जी अजस्र विरह-व्यथा को अपने हृदय में स्थान दिये हुए हैं। उनकी यह विरह-भावना प्राकृतिक रहलों की तरह अविरत्ल प्रवाहमयी हैं, उसमें जल-स्रोत की तरह अखण्ड गति हैं, आकाश की तरह असीम अवकाश है, सिन्धु की तरह अनन्त व्यथा है और पृथ्वी की तरह अक्षुण्ण सहिष्णुता है।

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जब' उच्चकोटि की रहस्यावादी गीत रचना है।

कवयत्री का कथन है -

'हे मेरे दीपक मधुर- जब कर मेरा हृदयांकर कर। हर युग में प्रतिदिन, प्रतिक्षण और प्रतिपल जलकर मेरे प्रियतम का पथ आलोकित कर। युग-युग में (जन्म-जन्म) में प्रतिदिन, प्रतिक्षण और प्रतिपल जलकर, मेरे प्रियतम का मार्ग तेजोमय करा। हे दीपक! तू धूप (आरती) बनकर लोक में सुगंध फैल। दे और अपने मृदुल शरीर को मोंम की तरह घुला दे। अनन्त प्रकाश-पुंज को विश्व में व्याप्त कर दे और अपने जीवन का हर अणु गत्वा दे। हे मेरे दीपक! पुलक-पुलक। कर जल!'

नव नूतन कोमल और शीतल जीव तुझ से ज्वालाकण माँग रहे हैं। विश्वरूपी शलभ (पतंग) तुम्हारे अन्वेषण में कहता है।'बाथ में तुझ में मिल कर भस्म न हो सका। विश्व में सारे जीव तेरे तेज-पुंज में विलीन होकर अपना हृदयार्पण करना चाहते हैं। आकाश में असंख्याक दीपक (नक्षत्र) नित्य जलते रहते हैं और उनमें कोई तेल (स्नेह) नहीं डाला जाता। सागर जलमय होता है, किन्तु उसका हृदय भी सदा जलता रहता है, समुद्र के गर्भ में 'बडवागिन' होती है। बादली पानी बरसता हैं, किन्तु उस में बिजली (अग्नि) होती है। सारे संसार में कोई जीव या वस्तु नहीं जो अन्दर से जलता न हो। सारा विश्व अन्तर्लीन हो कर भभकता रहता है।'

हे मेरे दीपक! विहँस-विहँस कर जला।

वृक्ष के काण्ड, शाखाएँ, उपशाखाएँ, पत्र सब कुछ हरे भरे होते हैं, किन्तु वे भी ज्वाला को हृदयांगन कर

लेते हैं। उनका हृदय भी सतत संतप्त होता रहता है। धरती जड दिखाई देती है। लेकिन उसके गर्भ में तापों (गर्मी) की हलचल होती है। लेकिन ऊपर से यह वसुधा शान्ति दीखती है, किन्तु उसके हृदय में भी अग्नि-भाण्ड है। मेरे द्रुततर जीव निस्वासों से बुझने का डर मत कर। मैं अपनी चंचल मृदु पलकों से लिए अंचल की ओट किये हूँ।

''हे मेरे दीपक! सहज-सहज जल!''

अनंत काल गमन में हमारा बन्धन बिलकुल छोटा है। अब तू समय की परवाह न कर और घडियाँ मत गिना। मैं अपने नेत्रों के अक्षय भंडार से तुझ में आँसू रूपी जल भारती रहुँगी। तुम को मैं अपने आँसूरूपी जल से जीवन प्रदान करूँगी।

असीम अन्धकार में तेरा प्रकाश चिरकाल रहेगा। यहाँ सारे जीव निरन्तर नूतन (नष) खेल खेलते रहेंगे। घन अन्धकार के अणु-अणु में विद्युत की तरह अमिट छाप (चित्र) अंक्ति करता चल तू जितना जल सकता है, उतना जल क्यों कि छलनामय (घोखेबाज) क्षय समीप आनेवाला है। उसके मधुर मिलन में तू मिट जाना और उस अनन्त उज्वल तेजोमण्डल में तू घुल कर खिल जा।

हे मेरे दीपक! मदिर-मदिर जल और जल कर प्रियतमा का पथ आलोक्ति कर।

समीक्षा :-

(क) असीम विरह-व्यथा :-

इस कविता में महादेवी जी की विरह व्यथा व्यक्त होती है। उस विरह-व्यथा में भाव-साधना के अश्रुओं का अविरल प्रवाह भरा हुआ है, हृदय-सिन्धु का सतत उद्वेलित ज्वर भरा हुआ है। इसलिए वह विरह-व्यथा असीम है, अविरल हैं, शाश्वत और अनन्त है। कवयत्री और विरह व्यथा दोनों एकाकार होकर उनकी विरहानुभूति में अभिव्यक्त हुई है। इसलिए कवयत्री महादेवी जी अपने जीवन दीपक के सतत प्रज्वलित रहने की कामना व्यक्त करती हैं।

(ख) प्रतीक योजना :-

'दीपक' को जीवन का प्रतीक मानकर बढ़ी है। मनोरम कल्पना की गई है। यह कविता की प्रती कात्मकता है।

(ग) वैज्ञानिक विशेषता :-

'जलमय सागर का उर जलता' और 'विद्युत से घिरता है बादल' में वैज्ञानिक विशेषता प्रकट हुई है। व्यतिरेक अलंकार का प्रयोग हुआ है।

(घ) दार्शनिक परिणति :-

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' उच्च कोटि की दार्शनिक गीता-रचना है और रहस्यावाद की ज्वलंत कविता है। यहाँ कवयत्री की स्वानुभूति की संवेदना प्रकट होती है।

जीव के हृदय स्थित ज्योति का संबोधन यहाँ हुआ है - ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्मीअहमस्मि, यह उपनिषद् वचन है।

मानव के हृदय में 'नील' ज्योति होती है और उसके बीच परमात्मा का स्थान होता है। इस उपनिषद्वचन को हृदयंगम कर कवयत्री महादेवी ने अपनी रहस्यात्मक संवेदना को अक्षर रूप दिया है।

नीलतोयद मध्यस्तात विद्युल्लेखेव भास्करा।

नीवारशूकवत्तन्वी पीताभास्यत्यणूपमा।

तस्या शिखाया मध्यये परमात्मा व्यवस्थितः।

5. 4

'मैं नीरभरी दुःख की बदली'

कविता का सारांश :-

महादेवी जी कृत 'मैं नीर भरी दुःख की बदली, कविता कवयत्री अपने हृदय की असीम व्यथा व्यक्त करती है। महादेवी जी स्वयं को वेदना के जल से भरी हुई एक दुःख की बदली बताती हैं। जिसके स्पन्दन में चिर निस्पन्द, बडा हुआ है। उसके करुण-क्रन्दन में आश्रित विश्व हँस रहा है। उसके नेत्रों में निरन्तर दीपक जलते रहते हैं और उसकी पलकों में सतत निर्झरिणी मचलती रहती है।

मैं नीर भरी दुख की बदली।

स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा,

क्रन्दन में अवहत ''विश्व हँसा,

नयनों में दीपक से जलते, पलकों से निर्झरिणी मचली।''

कवयत्री का स्वयं कथन है - मैं नीर भरी दख की बदली हूँ। मेरे स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा हुआ है। मेरे करुण-क्रन्दन में व्यथित विश्व हँस रहा है। मेरे नेत्रों में निरन्तर दीपक जलते रहते हैं और मेरी पलकों से निर्झरिणी सतत मचलती रहती है।

मेरा पग-पग संगीत से भरा हुआ है और मेरे श्वासों में स्वप्न-पराग झरता है। आकाश में नवरंग वस्त्र जैसा बनते हैं। (ताना-बाना की तरह) छाया में मलय पवन पलता है। क्षितिज-भृकुटि पर घिर कर धूमिल हो, अविरल चिन्ता का भार बनती हूँ। रज-कण पर जल-कण हो मैं बरसती हूँ और नवजीवन का अँकूर बनकर निकला पडती हूँ।

हे प्रियतम! तुम पथ को मलिन करते न आना और लौटजाते समय पद-चिह्न न देते जाना। इस आगम के जग में मेरी सुधि मिली है और सुख की सिहरू खिलने लगती है।

विस्तृत आकाश का कोई भी कोना कभी मेरा अपना न होना। मेरा इतिहास यही और इतना ही है। कल मेरा जन्म हुआ और आज मिट-चली।

समीक्षा :-

इस कविता में 'विरह-व्यथा, की अजम्रता व्यक्त होती है। महादेवी जी ने इस प्रगीत मुक्तक के द्वारा जीवन एवं जाग्रत में व्याप्त स्वानुभूत सुख-दु:खों की अत्यधिक रामणीय अभिव्यंजना की है। उन्होंने विश्वव्यापी दु:खों एवं पीडा को अत्यन्त मार्मिकता एवं सजीवता के साथ चित्रित किया है। यह कविता कवयत्री की स्वानुभूति वेदना की उज्वल प्रीतक है।'

छायावादी कविता का यह उज्वल तम उदाहरण है।

- Lesson Writer

- डॉ. शेख मौला अली

5. 5

'महादेवी का वेदना-भाव'

1. प्रस्तावना :-

आधुनिक युगीन हिन्दी-कवयत्री महादेवी के काव्य में वेदना की एक ऐसी धारा सर्वत्र विद्यमान है, जो कि पाठकों और आलोचकों के लिए एक अस्पष्ट, जटिल एवं दुर्बोध विषय बना हुआ है। विभिन्न विद्वानों ने इस पर अपने-अपने विचार व्यक्त किये हैं। स्वयं कवयत्री ने भी इस पर यत्र-तत्र प्रकाश डालने का प्रयास किया है। महादेवी की वेदना एक रहस्यात्मक परदा है, जो उनके जीवन और काव्य की भाव-भूमि पर आधारित है।

2. वेदना का स्वरूप :-

महादेवी ने अपने 'वेदना' भाव का उल्लेख 'वेदना' एवं 'पीडा' आदि शब्दों में किया है। वेदना या पीडा के उल्लेख के साथ मधुर विश्लेषण का प्रयोग भी सर्वत्र हुआ है जैसे - 'मधुमय पीडा', 'वेदना के मधुर क्रय' साधारणत: वेदना या पीडा, मधुमय नहीं होती। किन्तु एक अनुभूति ऐसी भी होती है जहाँ एक और हृदय में अतुलित आह्लाद होता है। वहाँ दूसरी ओर अत्यधिकपीडा भी उस मीठी और तीखी अनुभूति को 'प्रेम' या 'प्रणय' की संज्ञा दी जाती है। प्रणयानुभूति में 'मधुरता' तथा 'वेदना' दोनों का अनभव एक साथ होता है।

मेरी मधुमय पीडा को कोई पर ढूँढ़ न पाये।

पालियों में ने कैसे इस वेदना के मधुर क्रम में।

गई वह अधरों की मुस्कान, मुझे मधुमय पीडा में बोर वेदना - मिश्रित बताने का प्रचलन बराबर रहा है। महादेवी की 'मधुर-पीडा' भी प्रेम की ही पर्यायवासी कही जा सकती है। 'मधुमय पीडा' और 'अधरों' की मुस्कान 'साथ-साथ' चलती हैं। अनन्त परमात्मा प्रियतम को सम्बोधित कर महादेवी जी कहती है -

तुम को पीडा में ढूँढा, तुम में ढूँढूँगी पीडा।

महादेवी जी स्पष्ट कहती है कि ''तुम में ढूँढूँगी पीडा'' - यह 'तुम' गौण है और 'पीडा' प्रधान। 'पीडा' का अर्थ प्रेम या प्रणय है। प्रेम से ही कवयत्री को प्रियतम की प्राप्ति हुई है और प्रियतम में भी वह पीडा (प्रेम) ढूँढ़ना चाहती हैं।

3. प्रणय युक्त द्वैत-भावना :-

महादेवी जी सशरीर जीवन में प्रियतम के दर्शन चाहती हैं। वे अपनी द्वैत स्थिति के साथ-साथ प्रेम-रस का भी अस्वादन करना चाहती है। उन्होंने 'वेदना' या 'पीडा' शब्द का प्रयोग 'प्रणय' के अर्थ में ही किया है। उनके प्रणय में विरह का आधिक्य है।

प्रिय ! मैं लेती बाँध मुक्ति

सौ-सौ लघुतम बन्धन अपने में,

तुम्हें बाँध पाती सपने में।

महादेवी जी कई बार अपनी पीडा को सुरक्षित रखने के लिए प्रियतम के मिलन तक ठुकरा देती हैं। वे अद्वैतवाद में विश्वास रखती हुई भी द्वैत स्थिति को ही अधिक चाहती हैं, प्रेम का यह समस्त व्यापार तभी तक चल सकता है, जब तक कि कवयत्री अपनी पृथक सत्ता बनाए रखें। अतः शान्तिपूर्ण निर्वाण या मोक्ष की अपेक्षा यह पुण्य-युक्त द्वैत के अनुभव को अधिक पसन्द करती हैं।

4. वेदना का उन्मेश :-

महादेवी ने अपने जीवन में वेदना का उन्मेश किस प्रकार हुआ-इसका वृत्तान्त उन्होंने बार-बार अपने गीतों में बताया है। कवयत्री मुग्धावस्था में ही किसी की चितवन से आहत हो, सदा के लिए पीडा के पुण्य बन्धन में बांध गई।

इन ललचाई पलकों पर,

पहरा जब या व्रीडा का साम्राज्य मुझे दे डाला,

उस चितवन ने पीडा का।

कुछ स्थानों पर महादेवी जी 'चितवन' के स्थान पर उस अदृश्य की मुस्कराहट से वशीभूत होने की बात भी कहती हैं -

बिछानी थी सपनों के जाल

तुम्हारी वह करुणा की ओर,

भई वह अधरों की मुस्कान,
मुझे मधुमय पीडा में बोर।

× × ×

यह घटना बहुत पुरानी है।
तब से न जाने कितने युग बीत गये।

गये तब से कितने युग बीत, हुए कितने दीपक निर्वाण महादेवी जी ने अपनी किशोरावस्था के दिनों ही इस प्रणय वेदना का राग आलापना आरम्भ कर दिया था। अत: इस घटना को बहुत पुरानी बताना समीचीन है।

5. वेदना का आलम्बन :-

महादेवी जी ने अपनी प्रणय-वेदना के आलम्बन का वर्णन सांकेतिक रूप में विविध स्थानों पर किया है। अपनी प्रथम भेंट के सम्बन्ध में वे लिखती हैं –

झंटक जाता था पागल बात,
धूलि में तुहिन कणों का हारा
सिखाने जीवन का संगीत,
तभी तुम आये थे इस पार॥

उनकी संगीतज्ञता का परिचय अन्य गीतों में भी मिलता है –

मूक प्रणय से, मधुर व्यथा से,
स्वप्न लोक – आह्वान।
वे आये चुपचाप सुनाते,
तब मधुमय मुरबी की ताना।

कवयत्री अपने निर्गुण निराकार प्रियतम की अस्पष्ट सी झलक कवयत्री प्रकृति के रूप-वैभव में देखती है –

मेघों में विद्युत सी छवि उनकी बनकर मिट जाती।

आँखों की चित्रपटी में जिस में मैं अंक न पाऊँ॥

कई बार यह निर्गुण ब्रह्म आत्मा के साथ आँख-मिचौनी

खेलता हुआ भी दृष्टिगोचर होता है।

मैं फूलों में रोती, वे बालारुण में मुस्काते।

मैं पथ में बिछ जाती हूँ, वे सौरभ में उड जाते॥

कवयत्री महादेवी वर्मा अपने अलौकिक प्रियतम की प्रतिछवि प्रकृति के सौन्दर्य में देखती हैं। विद्युत में उनकी छवि, राशि किरणों में उनकी आभा, सागर की तरंगों में उनका खासोच्छ्वास और तारकों में उनकी अपलक चितवन का आभास मिलता है।

6. वेदना भाव का उद्दीपन :-

महादेवी जी की अलौकिक प्रेम में प्रकृति के विभिन्न रूपों का प्रभाव स्पष्टतथा दृष्टिगोचर होता है। प्रकृति के क्रिया-कलापों के कवयत्री अपने प्रणय के स्वप्नों का साक्षात्कार करती है। अपनी ही मनस्थिति के अनुकूल कवयत्री प्रकृति के कण-कणा में करुणा, वेदना और आँसुओं का दर्शन करती है।

झूम-झूम कर मतवाली सी पिये वेदनाओं की प्याला,

प्राणों में रुँधी निःश्वासे आती ले मेघों की माला,

उसको रह-रह कर रोने में, मिलकर विद्युत के खोने में।

महादेवी जी के जीवन में आशा और उल्लास का संचार होता है तो उन्हें मेघ मुस्काते हुए, जलधर हँसते हुए और विद्युत प्रणय की सुनहली पाश के सदृश प्रतीत देती है।

मुस्काता संकेत भरा नभ अलि क्या प्रिय आनेवाले हैं।

विद्युत के चल स्वर्ण-पाश में बँध हँस देता रोता जलधर।

अपने मृदु मानस की ज्वाला गीतों से नहलाता सागर॥

महादेवी ने प्रकृति के उद्दीपन रूप की व्यंजना महादेवी ने सफलता पूर्वक की है।

6. प्रेमिका के अनुभव :-

महादेवी जी ने अपनी वेदनानुभूतियों की अभिव्यंजना अत्यन्त सूक्ष्म में की है, फिर भी उनके काव्य में विभिन्न शारीरिक, मानसिक एवं सात्विक अनुभवों का चित्रण कहीं-कहीं उपलब्ध होता हैं।

अलि कैसे उनको पाऊँ।

वे आँसूँ बनकर मेरे, इस कारण ढुल ढुल जाते।

इन पलकों के बन्धन में मैं बाँध-बाँध पछताऊँ॥

चुपके से मानस में अछिपते उच्छ्वासें बन।

जिस में उनकी साँसों में देखूँ पर रोक न पाऊँ॥

महादेवी जी अपने 'अनुभवो' को व्यक्त नहीं होने देती। फिर भी उनके आँसुओं की चर्चा उनके उनके काव्य में मिलती है -

मुलक -पुलक उर सिहर-सिहर तन, आज नयन आते क्यों भर-भर!

8. संचारी एवं अन्य भाव :-

महादेवी के वेदना-भाव में दो अन्य भाव सदा सहचरी रूप में मिश्रित रहते हैं - (1) जगत के दीन-दुखियों के प्रति करुण भाव और दूसरा निजी वैभव के प्रति निर्वेद का भाव। कवयत्री स्वयं विरहिणी हैं। अत: उनका प्रकृति एवं जगत। के शोकातुर प्राणियों के प्रति संवेदना व्यक्त करना स्वाभाविक ही है। फूलों के जीवन की दु:खमय परिणति देख कर महादेवी का हृदय-वेदना जागृत हो जाती है।

देकर सौरभ दान पावन से कहतेजब मुरझाये फूल,

जिसके पथ में बिझे वही क्यों भरता इन आँखों में धूल?

'अब इन में क्या सार', 'मधुर जब गाती भौरों की गुनार मार्मर का रोदन करता है,' ''कितना निष्दुर है संसार।''

यहाँ कवयत्री की हृदय-वेदना ही 'मर्मर का रोदन' है।

महादेवी को अपनी करुण-वेदना से जितना अनुराग है, उतना ही उसे अपने करुणा-भाव से स्नेह है। वे इस तथ्य को स्पष्ट तथा स्वीकार करती हुई लिखती हैं - ''दु:ख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है, जो सारे संसार को एक सूत्रा बाँध रखने की क्षमता रखता है .... मनुष्य सुख को अकेला भोगना चाहता है, परन्तु दु:ख सब को बाँटकर विश्व-जीवन में अपने जीवन को, विश्व-वेदना में अपनी वेदना इस प्रकार मिला देना जिस प्रकार जल-बिन्दु समुद्र में मिल जाता है।'करुण' भाव के अतिरिक्त महादेवी के प्रणयात्मान के अनेक अन्य संचारियों और विभिन्न प्रणय :- दशाओं का विकास भी दृगिटगोचर होता है। संचारी भाव - ''

दैन्य उदाहण - **सिन्धु को परिचय दे देव! बिगडते बनते कीथि**

क्षुद्र हैं मेरे बुदबुद प्राण, तुम्हीं में सृष्टि विलास तुम्हीं में नाश॥

इसी प्रकार प्रेम की विभिन्न भाव-दशाओं-मिलनाकांक्षा, प्रतीक्षा, अभिसार, मिलन, विरह आदि का निरूपण भी महादेवी जी के काव्य में हुआ है। प्रेमी को प्राप्त करने की आकंक्षा - ''अति कैसे उनको पाऊँ!'' - में व्यक्त हुई मिलन के मधुर स्वप्नों की कल्पना करती हुई कवयत्री कहती हैं अन्य असीम से हो जायगा, मेरी लघु सीमा का मेल॥ देखोगे तुम देव, अमरता खेलेगी मिटने का खेल॥

मिलन की आशा से कवयत्री के हृदय और मन पुलकित होते हैं -

पुलक-पुलक डर, सिहर-सिहर तन, आज नयन आते क्यों भर-भर ।

जीव सरारीर अलौकिक प्रियतम से मिलना संभव नहीं। आत्मा शरीर से मुक्त हो कर ही परमात्मा का सायुज्य पा सकती है। किन्तु उस स्थिति में दोनों का अद्वैत भाव नष्ट हो जाता है। द्वैत भावना नष्ट होती ही प्रेम का आधार समाप्त हो जाता है। अत: कवयत्री महादेवी प्रेम शून्य मिलन की अपेक्षा प्रेमयुक्त विरह को ही स्वीकार करती है -

मिलन मत नाम ले, विरह में मैं चिर हूँ।

9. निष्कर्ष :-

महादेवी के काव्य में रस के सभी प्रमुख तत्त्व विद्यमान हैं। फिर भी उनके पि वेदना-भाव के साथ पाठक का पूर्णतया साधारणीकरण हो नहीं पाता। इसका कारण है, उन्होंने अपने अधिकांश गीत कल्पना और विचार के आधारपर लिखे हैं। इस लिए कवयत्री में अनुभूति नहीं मिलती। उनका आलम्बन अलौकिक होने के कारण पाठक प्रत्यक्ष रूप से साक्षात्कार नहीं कर पाता। कबीर ने अपने अलौकिक प्रेमको दाम्पत्यन जीवन के लौकिक

रूप में प्रस्तुत किया है। अत: पाठक का उन से तादात्म्य हो जाता है। किन्तु महादेवी के काव्य में यह बात नहीं मिलती।

महादेवी की शैली में संकेतात्मकता, व्यंग्यात्मकता एवं अस्पष्टता भी आवश्यकता से अधिक है। उनके गीत पाठक के हृदय को रस-प्लावित कर नहीं पाते। संक्षेप में 'हम कह सकते हैं कि उनके काव्य में थोडी मात्रा में भाव या अनुभूति, उस से अधिक मात्रा में विचार और सब से अधिक मात्रा में कल्पना है।' अत: उनके काव्य में कविता, दर्शन और चित्रकला तीनों एक साथ दर्शित होते हैं।

5. 6

महादेवी वर्मा की कविता में व्यक्त रहस्यावाद

1. रहस्यावाद की परिभाषा :-

रहस्य का अर्थ है - छिपी हुई बात। अत: जिसका मूलाधार छिपा हुआ है, अज्ञात है, उस के बारे में विचार करना 'रहस्यावाद' है। विश्व का सब से बडा रहस्य वह परम तत्त्व या परमेश्वर है, जिसने इस विश्व का निर्माण किया और इसके पाल-पोषण एवं संहार में प्रवृत्त है। इस परमात्मा को जानने, देखने व प्राप्त करने का प्रयत्न युग-युगों से असंख्य दार्शनिक, साधक, भक्त एवं महात्मा-गण करते आ रहे हैं। फिर भी वह परमात्मा अज्ञेय है, अदृश्य है और अगम्य है। रहस्यावाद का सम्बन्ध विश्व की उस रहस्यमयी शक्ति से है। जब मानव की आत्मा उस शक्ति तक पहुँचने का प्रयास करती हुई विभिन्न पकार की अनुभूतियाँ प्राप्त करती है और उन्हें भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त कर देती है तो एक ऐके भाव-समूह का संचयन हो जाता है, जिसे साहित्यिक शब्दावली में 'रहस्यावाद' कहते हैं। इस 'रहस्यावाद' को स्पष्ट करने के लिए विद्वानों ने विभिन्न परिभाषाओं के प्रकाश की रंगृ-विरंग किरणों विकीर्ण की है। कबीर उस रहस्य शक्ति के बारे में - 'कहि बे कूँ शोभा नहीं, देख्या ही परमाण' कहकर, 'रहस्य-गाथा' को 'अकथ कहानी प्रेम की' बता कर और रहस्यानुभूति को 'गूँगों का गुड' मानकर मौन रह जाते हैं।

जयशंकर प्रसाद ने हे अनन्त रमणीय! कौन तुम? यह मैं कैसे कह सकता। (कामायनी) कहकर उस परमसत्ता का सम्बनोधन किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रहस्यावाद के सम्बन्ध में लिखा है - 'चिन्तन के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद है, भावना के क्षेत्र में वही रहस्यावाद है।'

रहस्यावाद के सम्बन्ध में महादेवी का कथन है - 'जब प्रकृति की अनेक रूपता, परिवर्तनशील विभिन्नता में कवि ने एक ऐसा तारतम्य खोलने का प्रयास किया, जिसका एक छोर किसी असीम चेतन में और दूसरा

उसके असीम हृदय में समाया हुआ था। तब प्रकृति का एक-एक अंश एक अलौकिक व्यक्ति लेकर जाग उग। परंतु इस सम्बन्ध में मानव हृदय की सारी प्यास न बुझ सकी, क्योंकि सम्बन्धों में जब तक अनुराग जनित आत्म विसर्जन का भाव नहं घुल जाता तब तक वे सरस नहीं हो पाते और जब तक यह मधुरता सीमातीत नहीं हो जाती तब तक हृदय का अभाव नहीं दूर होता। इसी से इस अनेक रूपता के कारा। पर एक मधुरतम व्यक्तित्व का आरोपण कर उसक किनट आत्म निवदेन करदेना। इस काव्य का दूसरा सोपना बना जिसे रहस्यमय रूप के कारण रहस्यावाद का नाम दिया गया।'

वस्तुत: काव्य में आत्मा और परमात्मा में प्रेम की व्यंजना को 'रहस्यावाद' कहते हैं।

2. रहस्यावाद के प्रमुख लक्षण :-

रहस्यावाद के तीन प्रधान लक्षण हैं - (1) अद्वैतवादी विचारधारा की स्वीकृति। रहस्यावादी चाहे किसी श्री कर्म या सम्प्रदाय को माननेवाला क्यों न हो, किन्तु मूलत: उसे यह स्वीकार करना पडता है कि आत्मा और परमात्मा अद्वैत (एक) हैं। (2) परम सत्ता से रागात्मक समन्ध की अनुभूति। रहस्यावादी के लिए आत्मा और परमात्मा की एकता की रागात्मक अनुभूति आवश्यक है। (3) भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति। रहस्यावाद के अन्तर्गत उन्हीं अनुभूतियों का समावेश किया जाता है, जो भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति की जाती है। उदाहरण के लिए ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रवर्तक महत्मा कबीर अलौकिक प्रेम को रहस्यावाद की वाणी में सुनते हैं -

आँखडियाँ झाँई पडी, पंथ निहारि-निहारि।

जीभडियाँ छाला पड्या, राम पुकारि-पुकारि॥

3. महादेवी की रहस्यानुभूति :-

महादेवी जी की रहस्यानुभूति की सभी विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है और उन्हें उच्च कोटि की रहस्यावादी कवयत्री मानते हैं। उनके रहस्यावादी दृष्टिकोण के चार रूप माने जाते हैं - (क) साधनामूलक रहस्यानुभूति, (ख) भावना-मूलक रहस्यानुभूति (ग) माधुर्यभाव-मूलक रहस्यानुभूति और (घ) मानवता मूलक रहस्यानुभूति।

(क) साधनामूलक रहस्यानुभूति :-

(1) जिज्ञासा, (2) साधना और (3) मिलन का आनन्द साधन मूलक रहस्यानुभूति के तीन अंग स्वीकर

किये गये हैं। साधन के हृदय में अंगोचर परम सत्ता के रहस्य को जानते की इच्छा ही 'जिज्ञासा' है। कवि (साधक) को उस चेतना-सत्ता का कुछ-कुछ आभास होने लगता है और उसे पाने के लिए उसके हृदय में सकल्प जाग्रत हो जाता है। इसी को साधना की स्थिति कहते हैं। साधना पूर्ण होने पर परम-सत्ता का साक्षात्कार हो जाता है। तब साधक या कवि अनिर्वचनीय संयोग का सुख प्राप्त करता है।

महादेवीजी के काव्य में साधनामूलक रहस्यामूर्ति की तीनों स्तर विद्यमान हैं। कवयत्री चन्द्रकिरणों को स्पर्श से कुमुद के पुष्पों को विकसित होते देख कर और वायु के निश्श्वास का स्पर्श पाकर नक्षत्रों को चकित होते देख कर अनजाने चौंकती-सी जाती है और उनके हृदय में भी उस दूर के संगीत की भाँति बुलानेवाली परम-सत्ता को जानने की अभिलाषा उत्पन्न हो जाती है और कवयत्री पुकार उठती है- 'वह कौन है?'

कुमुद-दल से वेदना के दाग को
पोंछती जब आँसुओं से रश्मियाँ,
चौंक उछती अनिल को निःश्वास छू
तारिकाएँ चकित सी अनजान सी।
तब कुला जाता मुझे उस पार जो
दूर के संगीत सा वह कौन है?

यहाँ कवयत्री महादेवी की जिज्ञासा की भावना व्यक्त होती है।

फिर कवयत्री उस परम-सत्ता को प्राप्त करने के लिए रात-दिन दीपक की भाँति दीपक की तरह जलते रहना पसंद करती हैं और अपने शरीर को मोम की तरह ही घुला देने में अपने को कृतकृत्य समझती हैं। वेअपने जीवन के अणु-अणु को गला कर प्रियतम के दर्शन के लिए साधनरात रहती हैं -

मधुर-मधुर मेरे दीपक जल!
युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,
प्रियतम फैला विपुल धूप बन,
मृदुल मोम-सा घुल रे मृदु तन!
हो प्रकाश का सिंधु अपिरिमित,

तेरे जीवन का अणु गल-गल!

कवयत्री की साधना पूर्ण होने पर वह दीपक के समान क्षण-क्षण पर अपने को मिटाती हुई धीरे-धीरे अपने प्रियतम का सामीप्य प्राप्त करती है।

दीप - सी मैं

आ रही अविराम मिट-मिट स्वजन और समीप-सी मैं।

नयन श्रवणमय नयनमय आज हो रहे कैसी उलझ॥

रोम-रोम में श्रोता री सखि एक नया उर का-सास्पन्दन।

साधना की पूर्ति होने पर साधिका-सिद्धि प्राप्त करती है और प्रियतम का साक्षात्कार हो जाता है। प्रियतम का श्रावणमय तथा नयनमय हो जातका है। तब आराधिका के रोम-रोम में अनुपम कम्पन होने लगता है और उसके प्राणों के छाले पुलफों से भर कर फूल बन जाते हैं -

पुलकों से भर फूल बन गये

जितने प्राणों के छाले हैं।

अलि क्या प्रिय आनेवाले हैं?

(ख) भावना - मूलक रहस्यानुभूति :-

इस के अन्तर्गत भावना, प्रणय - भावना, प्रेम - जनित आत्मानुभूति और चिरन्तन प्रियतम के विरह का व्यधिकता रहता है। इसी कारण यह 'भावना - मूलक रहस्यानुभूति' कहलाता है। महादेवी के काव्य में उस अनन्त चितंन सत्ता के प्रति विरह प्रेमजनित आत्मानुभूति की चरम सीमा पर भी पहुँच गया है। 'विरह का जल जात जीवन, विरह का जलजात' कह कर महादेवी ने अपने संपूर्ण जीवन को ही विरह का कमला कहा है, जिसका जन्म वेदना में हुआ है, करुणा में जिसका घर है, जिस के आँसुओं को दिन चुनता रहता है उसी रात जिस के एक - एक आँसू गिनती रहती है, जिसका हृदय ही - आँसुओं का खजाना है और नेत्र आँसुओं की टकसाल है और जिसका क्षणिक कोमल शरीर बादलों की ''भाँति अश्रुजल के कणों से ही कना है।''

विरह का जलजात जीवन विरह का जलजात।

वेदना में जन्म करुणा में मिला आवास,

अश्रु चुनता दिवस इसका, अश्रु गिनती रात।

आँसुओं का कोष उर, दृग अश्र की टकसाल,

तरल जलकण से बसे घन - सा क्षणिक मृदु गान।

उनका मन विरह की आग में दीपक की भाँति अविराम गति से जलता रहता है, जब कि यहाँ सूर्य-चन्द्र आदि भी छिप जाते हैं, और तारे भी बुझ जाते हैं।

आलोक यहाँ लुटता है, बुझ जाते हैं तारागण,

अविराम जला करता है पर मेरा दीपक सा मना।

अपनी इस तीव्र विरहानुभूति के कारण वे भी अपने प्रियतम की खोज में लीन रहती हैं, और उनके चरणों की रेखाएँ देख - देख कर उनको लगातार दूँढ़ती रहती हैं -

उजियारी अवगुण्ठन में विधु ने रजनी को देखा,

तब से मैं ढूँढ़ रही हूँ उसके चरणों की रेखा।

महादेवी प्रियतम की खोज में अपने आपको मिटा देती है और तब उन्हें दूर के संगीत जैसा। वह प्रियतम अपने ही हृदय जे गूँजता सुनाई पडता है। गूँजता उर में न जाने दूर केसंगीत सा क्या?

ध्यान - पूर्वक देखा जाय तो बात होता है कि महादेव जी की रहस्यानुभूति सूकियों की तरह भावना - मूलक की गहराई तक न पहुँचाई।

(ग) माधुर्य भाव - मूलक रहस्यानुभूति :-

महादेवी ने भी मीराबाई की तरह पार्थिव प्रेम और भौतिक पूजा में अपना विश्वास प्रकट नहीं किया है। पर भी अक्षत, चन्दन, अगर - धूम, आरती, अभिषेक- जल, पुष्प आदि सभी पूजा की सामग्रियाँ उपस्थित कर दी हैं।

हुए शूल अक्षत मुझे धूवि चन्दन।

अगर - धूप - सी साँस सुणि - गंध - सुरक्षित,

बनी स्नेह - लौ, आरती चिर, अकम्पित,

हुआ। नयन का नीर अभिषेक - जलकण।

महादेवी की पूजा – अर्चना सम्बन्धी मधुर भावना 'क्या पूजा क्या अर्चन रे' नामक गीत में व्यक्त हुई है। उन्होंने अपने लघुतम जीवन को ही उस असीम का सुन्दर मन्दिर बना लिया है। उनकी श्वासें निरन्तर उस देवता। का अभिनन्दन करती रहती हैं। आँसू उसके चरणों को कोते रहते है, पुलकित रोम ही अक्षत हैं, मधुर पीडा ही चन्दन है, मन ही स्नेहपूर्ण दीपक है, दृग के तारक नवोत्पल हैं, स्पन्दन ही धूप है, अधर प्रिय का नाम जपते हैं और पलकों का नर्तन सदैव ताल देता रहता है।

क्या पूजा क्या अर्चन रे।

'उस असीम का सुन्दर मन्दिर मेरा, मधुतम जीवन रे।'

× × × ×

प्रिय - प्रिय जपते अधर, ताल देता पलकों का नर्तन रे।

महादेवी जी में सच्ची अनुभूति है, किन्तु वह काव्य – कला का ताना – बाना पहन कर आयी है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी का कथन है कि मीराबाई अपने प्रियतम की खोज में राजमहल त्यागकर निकल पड़ी थी। और उन्हें गृह – वन पुकारती फिरती थी। महादेवी जी की ध्वनि अधिक धीमी और अधिक साम्य है।

अत: महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति मीरा की भाँति माधुर्य भाव – मूलक कह सकते।

(घ) मानवता मूलक रहस्यानुभूति :-

इस के अन्तर्गत संपूर्ण मानवता की चेतना की अनुभूति आती है कवि सर्वत्र व्याप्त परम सत्ता का अनुभव करता है। जड – चेतन में असीम परनसत्ता का प्रभाव देखता है उसकी अनुभूति सर्वात्मवाद या सर्ववाद पर आधारित होती है। ऐसा रहस्यवादी सम्पूर्ण मानवता का पुजारी बन ज़ाता है और मानवता के सुख – दुख में ममेक हो जाता है। महादेवी जी की रहस्यानुभूति इसी मानवतावादी दृष्टि कोण के अन्तर्गत भी आती है। कवयित्री ने परोक्ष अनुभूति के क्षेत्र में प्रवेश करके मानव के 'चिर – दग्ध – दु:खी' हृदय को पहचाना है। मानवों की शाश्वत वेदना को अनुभव किया है, मानवता की कसक एवं टीस का अनुभव किया है और जगती तल पर व्याप्त मूक – वेदना का साक्षात्कार किया है।

महादेवी जी रहस्यानुभूति में सन्तों तथा भक्तों की – सी साधनात्मक एकांगिता साम्प्रदायिकता एवं एकांकिता का सर्वथा अभाव है। कवयित्री पूर्णतया अद्वैत की पृष्ट भूमि पर स्थित होकर पुकार उठती हैं – 'बीन

भी हूँ मैं' तुम्हारी रागिनी भी हूँ।'' फिर वे लिखती हैं तुम अनन्त जलराशि ऊर्मि में चंचल - सी अवदात'। कवयित्री कभी द्वैत - भावना में कहती - ''मैं फूली में सोती, वे बालारुण में मुस्काते, मैं पथ में बिछजाती हूँ, वे सौरभ में उड जाते। '' कवयित्री की रहस्यानुभूति में मानवता के प्रति तीव्र ललक होने के कारण ही वे इस दृश्य जगत की वेदना में आर्थिक तल्लीन दिखाई देती हैं। कवयत्री नीलकमल पर हीरे - सी चमकती और, ती बूँदों को साथ मुरझाई पलकों से झरते हुए आँसुओं की बूँदों को भी देखना चाहती है। सुगन्धित मन्द पवन के साथ दुःख की घूँट पीती हुई ठण्डी - ठण्डी साँसों को देखना चाहती हैं।

देखूँ खिलती कलियाँ या प्यासे सूखे ऊधरों को दुःख की घूँट पीती या ठण्डी साँसों को देखूँ।

महादेवी जी वैभव को नहीं, कलिक संसार में व्याप्त क्रन्दन को देखती हैं -

तुझ में अम्लान हँसी है, उसमें अजसु आँसू-जल,

तेरा वैभव देखूँ या जीवन का क्रन्दर देखूँ।

4. उपसंहार :-

महादेवी जी की रहस्यानुभूति पर मध्यकालीन सन्तों एवं भक्तों की भावनाओं का प्रभाव अश्य है। उन में कबीर की भाँति लौकिक क्रियाओं से सम्पृक्त आत्मा एवं परमात्मा के मानवीय प्रेम - भावना नहीं है, सूफी कवि जायसी की भाँति प्रेमजन्य से आत्मानुभूति तथा प्रिय के चिरन्तन विरह नहीं है और मीराबाई की भाँति माधुर्य- भाव में लीन प्रणय - निवेदन नहीं है। उन्होंने चिर संतप्त जगत के मानवों का करुण - क्रन्दन लिया है और सर्वत्र एक चेतना का अनुभव किया है।

कवयत्री महादेवी जीने मानवता की शोक - संतप्त वेदना के साथ एकाकार होकर अपनी रहस्यानुभूति की अभिव्यंजना की है।

Lesson Writer

डॉ. शेख मौला आली

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

203HN21

M.A. DEGREE EXAMINATION

SECOND SEMESTER

HINDI

Paper III - **MODERN POETRY**

Time Three Hours | Maximum 70 Marks

आधुनिक कविता

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

प्रथम प्रश्न अनिवार्य है ।

अन्य प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजि ए ।

(4 x 7 1/2 = 30)

1. निम्ननलिखित अवतरणों की संदर्भ व्याख्या कीजिए । (4 x 10 = 40)

(a) (i) अचल के शिखरों पर जा चढी ।
किरण पादप - शीश - विहारिणी ।
नरणि - विम्ब तिरोहित हो चला ।
गगन - मण्डल मध्य शनै : शनै : ।।

(अथवा)

(ii) मुदित गोकुल की जन - मण्डली ।
जब ब्रजाधिप सम्मुख जा पड़ी ।
निरखने मुख की छवि यों लगी ।
तृषिन - चातक ज्यों घन की घरा ।।

(b) (i) घिर रहे थ धुँघरले बाल ।
अंस अवलंबित मुखा के पास ।
नील घन शावक - से सुकुमार ।
सुधा भरने को विधु के पास ।।

(अथवा)

(ii) बनो संसृति के मूल रहस्य ।
तुम्हीं से फैलेगी बह बल ।
विश्व - भर सौरभ से भरजाय ।
सुमन के खेलो सुन्दर खेल ।।

(c) (i) है आमा - निश, उगलता गगन घन अंधकार,
खो रहा निशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन भार,
अप्रनिहत गरज रहा पीछे, अम्बुधि विशाल,
भूघर जयों ध्यान - मग्न, केवल जलती मसाल ।

(अथवा)

(ii) विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजान
वेदना में जन्म, करूणा में मिला आवास
अश्रु चुनता दिवस श्सका, अश्रु गिनती रात ।
जीवन विरह का जलजात ।

(d) (i) द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र ।
है सृस्त - ध्वस्व । रे शुष्क शीणं ।
हम - ताप - पीत, मधु - वात - भीत
तुम वीत राग, जड, पुर चीन ।।

(अथवा)

(ii) तीस कोटि सुत, अर्ध नग्न तन,
अन्न वस्त्र पीडित, अनपढ जन
झाड फूँस खर के घर आँगन,
प्रणन शीश । तरूतल निवासिनी ।

2. (a) प्रियप्रवास के रचना - उद्देश्य की समीक्षा कीजिए ।

(अथवा)

(b) कामायनी के महाकाव्यत्व का निरूपण कीजिए ।

3. (a) राम की शक्ति पूजा के भाव पक्ष पर प्रकाश अलिए ।

(अथवा)

(b) श्रद्धा की चरित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश अलिए ।

4. (a) छायावादी कविता की मुवय प्रवृन्तियों पर प्रकाश अलिए ।

(अथवा)

(b) नौका विहार अथवा विरह का जलजात जीवन कविता की वस्तुगात विशेषताओं पर प्रकाश अलिए ।

5. (a) किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए । (7)

(i) कवि मैथिलीरारण गुप्त ।

(ii) कवि दिनकर ।

(iii) कवि अज्ञेय ।

(iv) अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध ।

(अथवा)

(b) किन्हीं दो पर टिप्पमी लिखिए ।

(i) दृत झारो ।

(ii) धीरे - धीरे उनर क्षितिज से ।

(iii) ताज

(iv) मैं नीर भरी - दुस्त्र की बदली ।

203 MA HIN

ORIGINALITY REPORT

28%	27%	14%	6%
SIMILARITY INDEX	INTERNET SOURCES	PUBLICATIONS	STUDENT PAPERS

PRIMARY SOURCES

1	www.dailypioneer.com Internet Source	12%
2	mptribalmuseum.com Internet Source	11%
3	Submitted to Pacific University Student Paper	2%
4	Polklas, Thomas. "Entwicklung eines numerischen Verfahrens zur strömungsmechanischen Auslegung des Abströmgehäuses einer Niederdruck-Dampfturbine", DuEPublico: University of Duisburg-Essen Publications Online, 2004. Publication	1%
5	Cohen, Yuval. "Fortunate Misfortune: A Discussion of the Moral Paradox", University of Haifa (Israel), 2021 Publication	<1%
6	Lösch, Richard. "Entwicklung von Verfahren zur Eliminierung von Cluttersignalkomponenten bei einem Nahbereichsradarnetz", KLUEDO, 2011. Publication	<1%
7	Submitted to Ho Chi Minh City University of Transport Student Paper	<1%
8	Havassy, András. "A Tokaji-hegységi Hercegkúti-patak forrásainak hidrológiai és	<1%

természetvédelmi szempontú vizsgálata és értékelése.", Debreceni Egyetem (Hungary)
Publication

9	F Anulli. "Proton Form Factors measurements in the time-like region", Journal of Physics Conference Series, 05/01/2007 Publication	<1%
10	"Neural Networks: Tricks of the Trade", Springer Nature, 1998 Publication	<1%
11	Sang Yong Lee. "Recent progress of spray-wall interaction research", Journal of Mechanical Science and Technology, 08/2006 Publication	<1%
12	Neumann, Jens Timo. "Arrival and Passage Times From a Spin-Boson Detector Model", Georg-August-Universitaet Goettingen (Germany) Publication	<1%
13	Hanoi Pedagogical University 2 Publication	<1%

Exclude quotes	Off	Exclude matches	< 14 words
Exclude bibliography	Off		

203 MA HIN

GRADEMARK REPORT

FINAL GRADE

/0

GENERAL COMMENTS

PAGE 1

PAGE 2

PAGE 3

PAGE 4

PAGE 5

PAGE 6

PAGE 7

PAGE 8

PAGE 9

PAGE 10

PAGE 11

PAGE 12

PAGE 13

PAGE 14

PAGE 15

PAGE 16

PAGE 17

PAGE 18

PAGE 19

PAGE 20

PAGE 21

PAGE 22

PAGE 23

PAGE 24

PAGE 25

PAGE 26

PAGE 27

PAGE 28

PAGE 29

PAGE 30

PAGE 31

PAGE 32

PAGE 33

PAGE 34

PAGE 35

PAGE 36

PAGE 37

PAGE 38

PAGE 39

PAGE 40

PAGE 41

PAGE 42

PAGE 43

PAGE 44

PAGE 45

PAGE 46

PAGE 47

PAGE 48

PAGE 49

PAGE 50

PAGE 51

PAGE 52

PAGE 53

PAGE 54

PAGE 55

PAGE 56

PAGE 57

PAGE 58

PAGE 59

PAGE 60

PAGE 61

PAGE 62

PAGE 63

PAGE 64

PAGE 65

PAGE 66

PAGE 67

PAGE 68

PAGE 69

PAGE 70

PAGE 71

PAGE 72

PAGE 73

PAGE 74

PAGE 75

PAGE 76

PAGE 77

PAGE 78